किसान की बेटी

1908

किसान की बेटी ।

प्रथम भाग

रेनल्डस-कृत "मे-मिडिल्टन" उपन्यास का भाषानुवाद ।

काशीनिवासी

बाबू गङ्गाप्रसाद गुप्त कृत

"भारतजीवन-सम्पादक" बाबू रामकृष्ण वर्म्मा द्वारा प्रकाशित और विक्रीत ।

काशी ।

हितचिन्तक प्रेस में मुद्रित ।

1903.

देखिए !

कई मित्रों के अनुरोध से हमने (Dr. Bernier's Travels) नामक अङ्गरेज़ी पुस्तक का नागरी भाषा में अनुवाद किया है । हिन्दी में उसका नाम " डाक्टर बर्नियर की यात्रा " रक्खा है। इतिहासप्रेमियों के लिए वह पुस्तक बड़े काम की होगी । उसके छप जाने पर (Imperial Gazetteer of India) और " तवारीख़-फ़िरिश्ता " आदि पुस्तकों के अनुवाद करने का भी विचार है।

जिन महाशयों को " डाक्टर बर्नियर की यात्रा " नामक पुस्तक के खरीदने की इच्छा हो उनको उचित है कि भारतजीवन के सम्पादक बाबू रामकृष्ण वर्म्मा से पत्र व्यवहार करें।

काशी
१—९—०३.

गङ्गाप्रसाद गुप्त ।

किसान की बेटी।

प्रथम भाग

पहला प्रकरण।

हमारा उपन्यास सन् १७८० ई० के वसन्तऋतु से प्रारम्भ होता है।

तीसरे पहर का समय था। ठण्डी ठण्डी हवा चल रही थी। सड़क के दोनों ओर लगे हुए वृक्षों की लम्बी डालियाँ झूम झूम कर परस्पर हाथाबाँहीं कर रही थीं। वृक्षों में लाल, हरे, नीले, पीले रङ्गबिरङ्गे विलायती फूल खिले हुए थे और चञ्चल चिड़ियाँ चतुर्दिक चुहचुहा रही थीं। सड़क के बाईं ओर एक चौड़ा नाला था जिसका स्वच्छ जल कल कल शब्द करता हुआ शीघ्र गति से बह रहा था।

ठीक इसी सड़क पर जिसका संक्षिप्त वृत्तान्त हम ऊपर लिख चुके हैं एक टमटम दृष्टिगोचर हुई, जिसको एक बलवान टट्टू खींच रहा था।

इस टमटम को एक उन्नीस वर्ष का युवक हाँक रहा था। यद्यपि वह युवक किसानों के से वस्त्र पहिने हुए था और देखने में गँवार जान पड़ता था तथापि विचारपूर्व्वक देखने से वह किसी भले घर का बालक प्रतीत होता था। उस लड़के का नाम रूबन-वेलिस था। टमटम पर अकेला वही नहीं

सवार था, वरन एक नवयौवना सुन्दरी भी थी जो किसी धनाढ्य किसान की पुत्री जान पड़ती थी ।

उस लड़की का नाम मे-मिडिल्टन था। वह सौदा खरीदने के वास्ते निकटस्थ ग्राम में टमटम पर चढ़ कर गई थी और अब घर की ओर लौट रही थी । मे-मिडिल्टन अपने पिता की इकलौती पुत्री थी । उसकी माँ उसे बाल्यावस्था ही में छोड़कर परलोक को सिधार चुकी थी । मे अति कोमलाङ्गी तथा असामान्य रूपलावण्याधिकारिणी होने पर भी घर के काम काज में बहुत चतुर थी। उसके बूढ़े पिता मिष्टर जॉन-मिडिल्टन उसको बहुत चाहते थे, क्योंकि उसका स्वभाव अत्यन्त सरल था और वह पिता पर बड़ी भक्ति रखती थी ।

माता की मृत्यु के अनन्तर मे का भरणपोषण उसकी एक मौसी द्वारा होता रहा, किन्तु भाग्य का फेर देखिए कि अभी उसने सीना पिरोना और पाकादि बनाना भली प्रकार नहीं सीखा था कि मौसी का भी देहान्त हो गया । परन्तु मे-मिडिल्टन ने अपने ही उद्योग एवं परिश्रम से बहुत कुछ सीख लिया और गृहकार्य्य में उत्तमता दिखाने लगी । रूबन-वेलिस सप्ताह में दो दिन, प्रति मङ्गल और शनिवार को गृहस्थी की सामग्री खरीदने के लिए मे-मिडिल्टन को किङ्गस-गेट नामक एक गाँव में जो उसके खेत से ५ मील के अन्तर पर उस सड़क के किनारे जो लन्दन गई है बसा था, ले जाया करता था ।

रूबन अपनी नवीना साथिन 'मे' से गुप्तस्नेह भी रखता था, परन्तु उसने कभी अपना प्रेम किसी के आगे प्रगट करने का साहस नहीं किया। यद्यपि वे दोनों अर्थात् मे और रूबन बाल्यावस्था से एक ही साथ रहते थे और यद्यपि दोनों ने साथ ही शिक्षा भी पाई थी,

तथापि वह बेचारा अपनी दशा देखकर रह जाता था और यही सोचता था कि—"कहां वह एक धनाढ्य किसान की बेटी और मैं उसका एक तुच्छ सेवक!"

हमारे पाठकों को रूबन-वेलिस और मे-मिडिल्टन का पूरा पूरा हाल मालूम होगया। अतः अब हम अपने किस्से की ओर मुड़ते हैं।

टमटम बराबर चली जाती थी और गाँव समीप होता जाता था कि सहसा मे की दृष्टि एक बुड्ढे पर पड़ी जो सड़क के किनारे हाथ पाँव पसारे लम्बा मृतप्राय पड़ा था।

मे०। (रूबन से) गाड़ी रोक लो, देखें यह मनुष्य अभी जीवित है वा मर गया है।

आज्ञानुसार गाड़ी रोक दी गई। पहले रूबन कूदा, तिस पीछे उसने हाथ का सहारा देकर 'मे' को उतारा। बुड्ढा पीड़ा के मारे कराह रहा था, किन्तु जब ये दोनों उसके पास पहुँचे और मे ने अपने जेब से एक छोटी शीशी निकाल कर उसको दो तीन बूंद औषधि पिलाई तो वह सचेत हुआ। मे ने पूछा—"अब तो जान पड़ता है कि आपकी तबीयत कुछ सम्हल गई। मेरा घर यहाँ से बहुत दूर नहीं है। आप मेरे साथ वहाँ चलें। पिताजी बहुत प्रसन्न होंगे और वहां आपकी चिकित्सा भी की जायगी।"

बुड्ढे ने धन्यवाद देकर कहा—"हां, ईश्वर की दया से अब मै अच्छा हूँ और आपके साथ चल भी सकता हूं, परंतु यह सोचता हूं कि ऐसा न हो कि आपको कष्ट हो।"

रूबन०। कष्ट! और इस दशा में! नहीं नहीं, फार्मर मिडिल्टन (अर्थात् मे के पिता जॉन) का द्वार प्रत्येक दीन दरिद्र के निमित्त सदैव

खुला रहता है। (मे की ओर देखकर) मिस महाशया ! चलिए, हम इस वेचारे को गाड़ी पर उठाँ ले चलें।

दोनों ने मिलकर उस बुड्ढे को गाड़ी पर चढ़ा लिया और जहां तक वन पड़ा इसके आराम का प्रबन्ध कर दिया। रूवन धीरे धीरे गाड़ी हाकने लगा, और थोड़ी ही देर में सब लोग गाँव में पहुँच गए।

गाड़ी से उतरते ही मे अपने पूज्य पिता के पास दौड़ी गई और उस जर्जर बुड्ढे का सारा हाल कह सुनाया। परहितकारी पिता ने पिकवैनी पुत्री की इस परोपकारिता पर पूर्ण प्रसन्नता प्रगट की और कहा—"आओ हम सब मिल कर उस बेचारे को किसी ऐसी जगह रक्खें जहां उसको सुख मिले।"

अन्त वह बुड्ढा गाड़ी से उतारा गया और एक वहुत अच्छे कमरे में उसको रहने की जगह दी गई, परंतु उसकी शोचनीय दशा देखकर मे के पिता मिष्टर जॉन ने रूवन—वेलिस को आज्ञा दी कि गाड़ी में दूसरा घोड़ा जोतकर गाँव में अभी जाओ और वहां से एक सुयोग्य डाक्तर बुला लाओ।"

रोगी की यह दशा देखकर सब की यह सम्मति हुई की उससे पूछा जाय कि उसका कोई इष्ट मित्र भी है वा नहीं, किन्तु उस समय वह इस योग्य नहीं था कि उससे कुछ पूछा जाता। दूसरे दिन मे ने उससे इस विषय में बात चीत की तो वह बोला कि—" न तो मेरा कोई मित्र है, न कोई नातेदार ही है। आप कृपाकर मेरे कोट के जेब से मेरी पॉकेट-बुक निकाल ला दीजिए।"

मे तुरंत उठकर चली गई और पॉकेट—बुक निकाल लाई।

बुड्ढा। आप मुझे सहारा देकर उठावें तो मैं यह पुस्तक

खोलूं और मेरे वास्ते जो कुछ खर्च हुआ है चुका दूं। यद्यपि मैं धनहीन हूं, तथापि ईश्वर की दया से अब भी मेरे पास आपका हिसाब चुकाने भर रुपया वर्त्तमान है।

मे०। यह आप क्या कह रहे हैं? इस जगह धनवान और धनहीन सब ही की सेवा की जाती है, परंतु बदले में उससे कुछ लिया नहीं जाता है। कदाचित् आपने यह सोचा होगा कि आपके सम्बन्धियों का पता ठिकाना पूछने से हम लोगों का यह अभिप्राय था कि आप यहाँ से चले जायँ। विश्वास मानिए, हमलोगों ने कदापि ऐसी अमानुषिक बात नहीं सोची थी। आपकी सेवा में सदैव तत्पर रहने के लिए हम सब प्रसन्नतापूर्व्वक प्रस्तुत हैं।

यह सुनकर बुड्ढे ने मे को अनेकानेक धन्यवाद दिए। इसके अनन्तर मन ही मन उस बुद्धिमती बालिका के सद्गुणों की प्रशंसा करने लगा।

दूसरा प्रकरण।

'मिडिल्टन' एक प्राचीन और प्रसिद्ध वंश था। मे के पिता जॉन-मिडिल्टन ९ भाई बहिनों में सबसे छोटे थे। परलोकवासी मिष्टर मिडिल्टन अर्थात् जॉन-मिडिल्टन के पिता ने खेती बारी में बड़ी उन्नति की थी और नक़द रुपया भी एकत्र कर लिया था। सुतरां उन्होंने यह सोचा कि अपनी सन्तान में से किसको नकद रुपया दें और किसे खेतीबारी का प्रबन्ध सौंपें।

बड़े बेटे विल्फ्रिड की इच्छा सौदागरी करने की थी, इसी

कारण उसको उन्होंने एक कारखाने में भर्ती करा दिया था। विल्फ्रिड ने अपने उद्योग से उस काम में अच्छी उन्नति की। इसके अनन्तर सलाह हुई कि यदि कुछ रुपया दे दिया जाय तो वह स्वयं भी उस कारखाने का साझीदार कर लिया जायगा। अतः जितने रुपयों की आवश्यकता थी पिता ने दे दिए और कहा—"ये रुपये जो तुमको दिए जाते हैं वेही हैं जो हमारे मरने के पीछे तुमको मिलते। अब हमारी संपत्ति से तुमको कुछ सम्बन्ध नहीं रहा।"

विल्फ्रिड ने कारखाने की यहाँ तक उन्नति की कि वह स्वयं उसका मालिक हो गया। हमारी कहानी के प्रारम्भ होने से दो वर्ष पहले ही वह बेचारा एक ही बालक जिसका नाम पिता के नाम पर (विल्फ्रिड) रक्खा गया था और जिसके विषय में आगे चलकर कुछ लिखा जायगा, मर गया था।

मिष्टर मिडिल्टन के दूसरे लड़के का नाम जॉर्ज था। उसकी रुचि भी व्यापार ही पर थी, परंतु वह एक स्थान से माल खरीदकर दूसरे स्थान में बेंचना चाहता था। पिता ने उसकी ऐसी इच्छा देख उसे भी बहुत रुपये दिए और वही बात जो विल्फ्रिड से कही थी कहकर विदा किया। जॉर्ज रुपये लेकर एक जहाज और माल अस्बाब खरीदकर कहीं चला गया। तबसे उसका कुछ हाल नहीं मालूम हुआ कि कहां गया और कहां है। उसके इस प्रकार गुम हो जाने के कारण सबने यह सोचा कि कदाचित् जहाज डूब गया और जॉर्ज समुद्र ही में रह गया।

मिडिल्टन साहब की दो बेटियाँ 'एन्ना' और 'मेरी' थीं। उन्होंने उन दोनों का विवाह लन्दन में दो प्रतिष्ठित

पुरुषों के साथ कर दिया था और उन दोनों को भी कुछ नकद रुपये दे दिए थे।

इस तरह मिष्टर मिडिल्टन ने अपना सब नकद रुपया बाँट कर छोटे लड़के जॉन को खेत का मालिक बना दिया था। कुछ दिन के बाद मिष्टर मिडिल्टन का देहान्त हुआ और मिष्टर जॉन पूर्ण रूप से खेत के स्वामी हुए। बहिनें जिनका विवाह लन्दन में हुआ था धनाढ्य पति पाकर ऐसी फूल गईं कि कभी भूले चूके भी भाई से मिलने आना तो दूर था मिष्टर जॉन को भाई कहने में भी अपनी नामहँसाई समझती थीं। अन्त वे दोनों भी दो लड़कियाँ छोड़कर मर गईं और मरते दम तक भाई से न मिलीं।

हमारे पाठकगण "मिडिल्टन" वंश से पूर्णतया परिचित हो गए, अब कहानी इस प्रकार वर्णन की जाती है कि उस बुड्ढे को आए लगभग एक महीना हो चुका था परंतु अभी तक वह रोग से मुक्त नहीं हुआ था। वह बुड्ढा अत्यन्त कुरूप था और उसके वस्त्रों के देखने से प्रतीत होता था कि वह धनहीन और दरिद्र है। इन सब के सिवाय उसका स्वभाव बहुत ही चिड़चिड़ा था, परंतु मे–मिडिल्टन कभी इन बातों पर ध्यान नहीं देती थी, वरन हर प्रकार से उसकी सेवा में प्रवृत्त रहती थी।

वह बुड्ढा अर्थात् मिष्टर डार्नले उस पॉकेट–बुक को कभी अपने पास से अलग न करता था बल्कि हर घड़ी सिरहाने रक्खे रहता था। किसी को उसके देखने की भी आज्ञा नहीं थी। बुड्ढे को अपनी बीमारी और उस दिन सड़क पर पड़े रहने का वृत्तान्त कहना भी आवश्यक था, इसवास्ते एक दिन मे–मि-

डिल्टन से कहने लगा—"मैं एक गरीब आदमी हूं। किसी आवश्यक काम के लिए लन्दन से किराये की गाड़ी पर सवार होकर जा रहा था कि रास्ते में मेरा यह हाल हुआ। विवश हो गाड़ी से उतर कर वहीं पड़ रहा, जिसके बाद मेरी दुर्दशा देख आप मुझे वहाँ से उठा लाईं। आप सबों ने जहाँ मुझ पर इतनी कृपा की है तहाँ इतना अनुग्रह और कीजिए कि मैं एक महीना यहां और रहूं।"

मिष्टर जॉन ने उसके बुरे स्वभाव पर तनिक भी ध्यान न दिया और उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली।

इस बातचीत के बाद मिष्टर जॉन अपनी पुत्री को साथ लेकर बगीचे में आए और इधर उधर की बातें करने लगे। सहसा उनकी दृष्टि रूबन-वेलिस पर पड़ी, जिसको देखते ही उन्होंने मे से कहा—"देखो रूबन अस्तबल की ओर जा रहा है। मैं उसे बहुत चाहता हूं। तुम्हारा विचार उसके बारे में कैसा है?"

मे०। मैं इस प्रश्न का कारण न समझ सकी, क्योंकि यदि मैं उसको अच्छा न जानती तो उसके साथ इतना मेल जोल क्यों रखती।

जॉन०। (प्रसन्न होकर) रूबन भी हमारी ही तरह एक किसान है। उसकी अवस्था अभी उन्नीस ही वर्ष की होगी। मैं बहुत प्रसन्न हूं कि मैंने उसको अच्छी शिक्षा दी है। बेटी मे! मैंने तुम्हारे वास्ते एक बात सोची है और आशा करता हूँ कि उसमें तुम भी सहमत होगी। सुनो,—मेरी सम्पत्ति और मेरी जमीन्दारी तुम सी एक मध्यम श्रेणी के किसान की बेटी के लिए सुख से जन्म भर खाने पहिरने को बहुत है। कदा-

चित् मेरी बहिनों एन्ना और मेरी की तरह तुम भी किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के साथ ब्याही जाना चाहती होगी, परंतु जहां तक मैंने देखा और सुना है ऐसे विवाह का परिणाम बहुधा दुःखमय ही होता है। देखो "कर्नल-विलासिस" जिन्हों ने तुम्हारी फूफी 'एन्ना' से विवाह किया था बहुत धन होने पर भी सदैव ऋणी रहते हैं, और मिष्टर- विउशम्प जिनके साथ तुम्हारी फूफी 'मेरी' का विवाह हुआ था, एक की जगह दो खर्चकर अपना धन किस प्रकार बहा रहे हैं।

मे०। (आश्चर्य्यान्वित होकर) मेरी समझ में नहीं आता कि यह बात आप क्यों कह रहे हैं।

जॉन०। बेटी! सच तो यह है कि मैं चाहता हूं कि तुम्हारा विवाह रूबन के साथ हो जाय, क्योंकि वह बहुत ही भला सीधा सादा होनहार लड़का है। यद्यपि वह धनहीन है और उसके साथ विवाह करने से तुम्हारे धन और तुम्हारी प्रतिष्ठा में उन्नति न होगी, किन्तु मुझे दृढ़ विश्वास है कि वह तुम्हारा धन नष्ट न करेगा वरन सदैव उसकी उन्नति ही की चिन्ता और चेष्टा में लगा रहेगा।

यह सुनकर मे-मिडिल्टन को आश्चर्य्य हुआ, किन्तु वह उस प्रकार की बालिकाओं में से न थी जो पिता की आज्ञा नहीं मानतीं हैं। इसके सिवाय वह ऐसी पितृभक्ता थी कि पिता के वास्ते अपने प्यारे प्राण को भी तुच्छ समझती थी। उसने अपने मन में इस श्लोक का कि—"पिता धर्म्मः पिता स्वर्गः पिता हि परमन्तपः। पितरि प्रीति मापन्ने प्रीयन्ते सर्वदेवताः॥" पाठ किया और बहुत ही नम्र होकर बोली—"पिताजी! मैं यावत् संसार के सुख से दूर रहना अच्छा समझती हूं, परंतु

आपकी आज्ञा का उलङ्घन करना महा पाप जानती हूं।" और वह यह कहकर रोने लगी। ठीक उसी समय सहसा पीछे की ओर से मिष्टर डार्नले ने बाग में प्रवेश किया । उनका इस समय आ जाना मे और उसके पिता दोनों को बुरा लगा, कारण कि दोनों ने सोचा कि कहीं मिष्टर डार्नले ने हमारी बातचीत सुन न ली हो ।

तीसरा प्रकरण ।

मिष्टर डार्नले में अब इतनी शक्ति आ गई थी कि बिना कष्ट चल फिर सकते थे और मिष्टर जॉन आदि के साथ "किङ्ग्स्-गेट" गिर्जे में जाया करते थे।

एक दिन मिष्टर जॉन रूबन-वेलिस को साथ लेकर खेत का काम देखने गए थे और मे अपने सब कामों से छुट्टी पाकर अपने कमरे में बैठी कुछ सी रही थी कि इतने में मिष्टर डार्नले चन्दन का एक छोटा सा बक्स हाथ में लिए हुए आए और कुर्सी खींच मे के सम्मुख बैठकर कहने लगे-"आज तुमने कल की तरह बढ़िया कपड़े नहीं पहिने ?"

मे० । जी हां, कल पूजा का दिन था और आज काम का दिन है ।

मिष्टर डा० । (मुसकुरा कर) हां मैं समझा । उस दिन को तुम छुट्टी और मनबहलाव का दिन समझती हो न कि पूजा का ।

मे० । गांव की जैसी रीति है उसके अनुसार मैं उस दिन को छुट्टी और पूजा दोनों का दिन समझती हूं और उस दिन

योग्यतानुसार हमलोग अच्छे वस्त्र पहिनना और इत्र लगाना शुभ समझते हैं।

मिष्टर डा०। अस्तु, जो हो मैं इन बातों में वादाविवाद नहीं करना चाहता। मैं आशा करता हूं कि तुम कृपापूर्व्वक इस वस्तु को जिसे मैं बड़े उत्साहसे भेंट देता हूं स्वीकार करोगी।

इतना कहकर मिष्टर डार्नले ने वह बक्स जो साथ लाए थे खोला। उसमें तीन बहुमूल्य रत्नजटित आभूषण दीख पड़े।

मे०। (अतीव प्रसन्न होकर) महाशय! मैं किस तरह और किन शब्दों में आपको धन्यवाद दूं?"

परंतु इसके साथ ही कोई ऐसी बात उसके मन में आई कि वह चुप हो गई और पुनः बोली—"कदाचित आप इस बहाने से उस थोड़ी सेवा का बदला चुकाते हैं जो मैंने और मेरे पिता ने की है?"

मिष्टर डा०। नहीं, कदापि नहीं। आप लोगों ने मेरे साथ जो जो उपकार किए हैं उनका बदला मैं कभी नहीं चुका सकता। मेरी इच्छा है कि आप इन आभूषणों को मेरे स्मारकचिन्हवत अपने पास रक्खें।

यह बात सुनकर मे देर तक चिन्तासागर में गोते खाती रही। वह कभी तो उन बहुमूल्य आभूपणों के विषय में सोचती थी और कभी मिष्टर डार्नले की बातों पर आश्चर्य्य करती थी। सहसा जान पड़ा कि कोई उत्तर उसको सूझ गया। वह बोली—"नहीं महाशय! मुझे क्षमा कीजिए। मैं इनको नहीं ले सकती। ये बहुमूल्य रत्न प्रतिष्ठित और धनाढ्य सुन्दरियों के वास्ते हैं न कि मुझ सी गरीब लड़की के लिए। मैं इतने ही में सहस्त्रगुणा आपकी अनुगृहीत हो गई कि आपने मुझ सी धन-

हीन लड़की को ये रत्नजटित आभूषण देने चाहे । ”

मिष्टर डा० । (निर्निमेष नेत्रों से मे को निहार कर) कदाचित् फिर तुमको मन में पछताना पड़े कि ऐसी वस्तु हाथ से क्यों गँवा दी ।

मे० । (मुसकुरा कर) नहीं साहब ! मुझको ऐसी वस्तु के न पाने का कुछ भी दुःख न होगा जिसके योग्य मैं नहीं हूं ।

मिष्टर डार्नले यह कह कर कि–“ जैसी तुम्हारी इच्छा हो ” वहाँ से चले गए । इस बात को पन्द्रह दिन व्यतीत हो गए । इस बीच में कोई ऐसी घटना नहीं हुई जो लिखने योग्य हो । मे-मिडिल्टन हर घड़ी अपने पिता की उस दिन की बात ही को सोचा करती थी । यद्यपि रूबन-वेलिस की पत्नी बनने की उसकी इच्छा नहीं थी, परंतु पिता की आज्ञा स्मरण करके चुप हो रहती थी ।

एक दिन तीसरे पहर मे अकेली बाग की सैर कर रही थी । उसका ध्यान उस समय न मालूम कहां कहां पहुँचा हुआ था । टहलते टहलते एक पेड़ के नीचे बैठ गई । हाथ में एक गुलाब का फूल था । वह उसको देखकर आप ही आप कहने लगी–“ यह फ़ूल मेरे जूड़े में बहुमूल्य गहने से अधिक शोभा देगा । ” सहसा पीछे से आवाज आई–“ यह फूल मुझे दे दीजिए । ”

यद्यपि सुनने के साथ ही ‘ मे ’ ने आवाज पहचान ली, परंतु फिर भी फिरकर देखा तो रूबन-वेलिस को खड़ा पाया ।

रूबन० । यद्यपि इस स्पष्टता और ढिठाई से फूल माँगना उचित नहीं है, परंतु जब मैं सुन चुका हूं कि आप इस फूल को उन आभूषणों से बढ़कर समझती हैं जो मिष्टर डार्नले

देते थे, तो मैं आशा करता हूं कि मुझसे जो आप ही का सा सीधा सादा है इसके देने में नहीं न करेंगी।

मे०। (सिर झुकाकर) यह तुमसे किसने कहा कि मिष्टर डार्नले मुझे गहने देते थे ?

रूबन०। आपके पिता और मेरे पूज्य स्वामी ने। और उन्होंने यह भी कहा है कि एक दिन ऐसा भी हो सकता है कि मैं उस कोमल हाथ को भी पा जाऊँ जिससे आज मैं फूल मांग रहा हूं।

रूबन इतना कहकर फूल लेने के लिए मे की ओर झुका, किन्तु मे हँसती हुई उठी और फुर्ती से जाकर कुछ दूर पर खड़ी हो गई।

रूबन०। क्या यह फूल मुझको नहीं दीजिएगा ? आपके पिता ने मुझे उस बात की आशा दिलाई है जो कभी होनेवाली नहीं थी।

मे ने मन में सोचा कि–"वृथा इस बेचारे का जी तोड़ना और एक प्रकार अपने पिता की आज्ञा का उलङ्घन करना बुद्धिमानी नहीं है।" यह सोचकर वह चाहती थी कि फूल उसको दे दे कि इतने में उसकी दृष्टि एक सुन्दर युवक पर पड़ी जो उसी की ओर आ रहा था। उसको देखते ही उसने अपनी टोपी जो वहां रक्खी थी उठा ली और घबराहट में फूल हाथ से गिर पड़ा।

युवक ने मे को सलाम किया और कहने लगा–"क्या आपने मुझे नहीं पहचाना ?"

मे०। अरे ! मेरे चचेरे भाई विल्फ्रिड !

विल्फ्रिड०। मैं अभी आया और सुना कि आप बगीचे

में हैं इसवास्ते यहीं चला आया।

मे०। पिता जी नहीं मिले ?

विल्फ्रिड। नहीं, परंतु देखो वह आपही चले आते हैं। आओ हम सब उनकी अगवानी को चलें।

यह हाल देखकर बेचारा रूबन बहुत ही उदास हो गया। उसने सोचा कि ऐसे रूपवान और धनी युवक को छोड़कर मे मुझसे क्यों विवाह करेगी ?

मे और विल्फ्रिड वहां से चले गए तब बेचारे ने उस फूल को भूमि पर से उठा लिया, और उसको वार वार चूमकर अपने प्राण से भी अधिक प्यारा बनाकर रख लिया।

चौथा प्रकरण।

विल्फ्रिड-मिडिल्टन बहुत ही सुन्दर और हृष्ट पुष्ट युवक था। लोगों से बहुत अच्छी तरह मिलता था और झूठ सच गप उड़ाकर अपने ऊपर प्रसन्न कर लेता था। लन्दन में रहने ही के कारण वह ऐसा हो गया था। वह व्यर्थ रुपये बहुत व्यय करता था और द्यूतप्रिय भी था। इन्हीं कारणों से उसने अपनी पैतृकसम्पत्ति को नष्टप्राय कर डाला था। अब चाचा के पास आया था कि कुछ उनसे भी ठगकर ले जाय।

मिष्टर जॉन को अपने भतीजे का हाल सुनकर बहुत दुःख हुआ था। यद्यपि उन्होंने उसको कई बेर लिखा था कि-"इन कुचालों को छोड़ दो और अपने पिता का धन जिसको उन्होंने बड़े परिश्रम से एकत्र किया था नीच कामों में न लुटाओ।" किन्तु उन पत्रों का प्रभाव पड़ना तो कैसा, किसी का उत्तर भी नहीं मिला।

विल्फ्रिड के आने और उसकी झूठी सची बातों से मिष्टर जॉन उसकी सब बुराई भूल गए और उसके साथ बहुत अच्छा बर्ताव किया ।

गत प्रकरण में हम लिख चुके हैं कि मे विल्फ्रिड को लेकर अपने पिता की ओर चली । जब विल्फ्रिड और मिष्टर जॉन से साक्षात हुआ तो मिष्टर जॉन उसको देखकर बहुत प्रसन्न हुए और मे से कहने लगे–" जल्दी जाओ और विल्फ्रिड के वास्ते टेबुल पर जलपान का सामान चुन दो । "

विल्फ्रिड० । नहीं नहीं, मैं यहाँ आप लोगों को कष्ट देने नहीं आया हूँ। मैं भी सबके साथ भोजन करूँगा । अभी तो बगीचे ही की सैर करने की इच्छा होती है ।

मिष्टर जॉन । जैसी तुम्हारी इच्छा हो, परंतु हाँ, सच सच बताओ तुम्हारे बारे में जो महा निन्दनीय बातें लोगों ने प्रसिद्ध की थीं वे सच थीं या झूठ ?

विल्फ्रिड० । वह किम्बदन्ती एकदम बे-सिर-पैर की थी । लन्दन के लोग ऐसे दुष्ट हैं कि जिसपर चाहते हैं उसी पर दोप लगा देते हैं ।

बेचारे मिष्टर जॉन सीधे सादे आदमी थे । वह विल्फ्रिड की बातों पर विश्वास करके बहुत प्रसन्न हुए, और बोले– " धन्य परमेश्वर कि वे बातें असत्य निकलीं ! अब कहो आज कल तुम्हें अपनी फुफेरी बहिनों से मिलने का अवसर मिला था कि नहीं ? "

विल्फ्रिड० । मैं उनसे बहुत कम मिलता हूं, इस कारण कि कर्नल विलासिस और ब्यूशम्प रुपया उधार मांगते हैं, और किसी से लेकर फिर देने की इच्छा उनकी होती ही नहीं

है । इन्हीं बातों से मैं अपव्ययी लोगों से मिलना पसंद नहीं करता । अब मेरे रहन सहन का ढंग ही बदल गया है ।

मिष्टर जॉन । मैं समझा, तुम्हारी इच्छा विवाह करने की है। वस्तुतः विवाह कर लेने से सुख की वृद्धि होती है । अब मुझे विश्वास हुआ कि वह बात असत्य थी कि तुमने थिएटर की एक एक्ट्रेस को घर में रख लिया है ।

विल्फ्रूड० । (घबरा कर) हाँ, सरासर झूठ थी ।

मिष्टर जॉन । अब मुझे अच्छी तरह विश्वास हो गया कि वे सब बातें असत्य थीं। (मे की ओर देखकर) क्या मे अब जवान लड़की नहीं मालूम होती है ?

मिष्टर जॉन ने विना सोचे समझे बड़ी निश्चिन्तता के साथ यह बात पूछी थी क्योंकि वह समझते थे कि विल्फ्रूड मे को उसी प्रकार चाहता है जैसे कोई भाई अपनी सगी बहिन को चहता होगा ।

विल्फ्रूड० । जी हाँ, ऐसी लड़कियाँ कम होती हैं ।

मिष्टर जॉन । और रूबन-वेलिस जो बाल्यावस्था में तुम्हारे साथ खेला करता था अब एक समझदार युवक हो गया है।

रूबन का नाम सुनकर भोली भाली मे को बहुत दुःख हुआ । उसने अपने मन में कहा—" अरेरे ! मैंने उस वृक्ष के नीचे बेचारे को अकेला छोड़ दिया । वह कैसा दुःखित हुआ होगा ।"

विल्फ्रूड ने मे से पूछा,—" क्या वह रूबन ही था जिसको हमने तुम्हारे साथ देखा था ? "

मे० । हां, वह रूबन था ।

तीनों अदमी बाग की सैर कर रहे थे कि इतने में

मिष्टर डार्नले लाठी टेकते हुए आते दिखाई दिए। मिष्टर जॉन उनको दूर से देखकर कहने लगे—"यह हमारे मेहमान मिष्टर डार्नले हैं।"

विल्फ्रिड०। यह मिष्टर डार्नले कौन हैं?

मिष्टर जॉन। यह बेचारे रोगी थे। मै इनको यहाँ उठा लाई थी। अब यह अच्छे हुए हैं और हमारे घर में रहते हैं।

मिष्टर डार्नले जब पास पहुँचे तो मिष्टर जॉन ने विल्फ्रिड से उनको मिला दिया। रूबन-बेलिस इतना शिथिल हो गया था कि अपनी कोठरी में जाकर बैठ रहा। आज उसकी भोजन करने की भी इच्छा नहीं थी, परंतु यह सोचकर कि कदाचित् मे को दुःख हो भोजन के समय उपस्थित हो गया। मिष्टर जॉन ने उसकी भी विल्फ्रिड से जान पहचान कराई, और कहा—"यह तुम्हारा बचपन का मित्र है।" किन्तु विल्फ्रिड ने इस बात पर विशेष ध्यान नहीं दिया, और मे के बराबर टेबुल पर जा बैठा।

इससे बेचारे रूबन को और भी शोक हुआ। विवश होकर एक ओर चुपचाप वह भी बैठ गया।

पांचवां प्रकरण।

चौथा प्रकरण पढ़कर प्रतिष्ठित पाठकगण समझ गए होंगे कि मिष्टर जॉन अपने सम्बन्धियों के बड़े हितेच्छु थे और उनकी हानि को अपनी ही हानि समझते थे।

विल्फ्रिड ने अपनी फुफेरी बहिनों का जो हाल कहा उसको सुनकर मिष्टर जॉन को अत्यन्त खेद हुआ। उन्होंने सोचा कि "जब लड़कियाँ पितृविहीना हो जायँगी तब उनकी

क्या दशा होगी ? ” यह सोचकर दूसरे दिन जलपान से पहले विल्फ्रिड को एकान्त में ले जाकर उनके विषय में बातें करने लगे।

विल्फ्रिड ने उन लड़कियों के बारे में जो कुछ कहा उसके इस जगह लिखने की कुछ आवश्यकता नहीं है। समय पर उन चारों लड़कियों का हाल वर्णित होगा।

बात करते करते मिष्टर जॉन ने मे के विवाह के विषय में जो बात स्थिर की थी प्रगट कर दी, जिसको सुनकर विल्फ्रिड अतिशय विस्मित हुआ, परंतु वह ऐसा मूर्ख न था कि तत्काल उस बारे में अपनी अनिच्छा प्रगट करता। उसने उस बात का तो कुछ उत्तर नहीं दिया, किन्तु बात टालकर कहने लगा— “ क्या यह निश्चय है कि (आपके बड़े भाई) मिष्टर जॉर्ज अब इस लोक में नहीं रहे ? ”

मिष्टर जॉन। हाँ, क्योंकि न तो वह जहाज जिसपर वह गए थे वापस आया, न उसका कोई खलासी ही आया।

विल्फ्रिड०। अस्तु, हां मे के विवाह के विषय में आप अभी क्या कह रहे थे ? क्या स्वयं मे रूबन के साथ विवाह करना चाहती है ?

मिष्टर जॉन। वह एक सुशीला बालिका है और जानती है कि उसकी प्रसन्नता और सुख पिता की प्रसन्नता और सुख पर निर्भर है। उसका चरित्र बहुत ही पवित्र है। उसकी सरलता का एक उदाहरण यह भी है कि मिष्टर डार्नले जिसको वह उठा लाई थी और जिसकी उसने बहुत सेवा सुश्रूषा की थी उसपर ऐसे प्रसन्न हुए कि उसको कई रत्नजटित आभूषण देने लगे, किन्तु उस सरलहृदया ने उनको

अस्वीकृत किया और कहा—"मैं इस योग्य नहीं हूं कि ऐसे बहुमूल्य आभूषण पहिनूँ।"

विल्फ्रिड०। निःसन्देह मे की सरलता प्रशंसनीय है, परंतु आपके मुँह से यह बात सुनकर मुझे आश्चर्य्य होता है। मैं समझता था कि मिष्टर डार्नले एक धनहीन और दरिद्री पुरुष हैं।

मिष्टर जॉन। सचमुच वह धनहीन हैं। कदाचित् ये आभूषण उस समय के होंगे जब वह धनवान थे। परंतु मे कहती थी कि वे सब तो नए थे!

विल्फ्रिड०। आश्चर्य्य की बात है। मेरी समझ में तो कुछ भी नहीं आता।

मिष्टर जॉन। अस्तु जो हो, किन्तु अब तुम रूबन के साथ अच्छे वर्ताव करना क्योंकि मैं उसको अपना दामाद समझता हूं।

मानो विल्फ्रिड ने कुछ सुना ही नहीं। उसने मनमें सोचा—"यह मिष्टर डार्नले हैं कौन?"

इतने में मे आ कर बोली—"चाय तय्यार है।"

जलपान के अनन्तर मिष्टर जॉन रूबन को लेकर जमीन्दारी का काम देखने चले गए और मे घरेलू कामकाज में लवलीन हुई। केवल विल्फ्रिड और मिष्टर डार्नले कमरे में रह गए तो दोनों में इस प्रकार बातचीत होने लगी——

विल्फ्रिड०। यदि आपको कष्ट न हो तो चलिए बगीचे की सैर कर आवें।

मिष्टर डा०। मैं तो चाहता था कि मिष्टर जॉन की गाड़ी पर सवार होकर एक स्थान की जो यहाँ से थोड़ी ही दूर पर है सैर कर आऊँ।

विल्फ्रड० । चलिए, मैं भी तय्यार हूं।

थोड़ी देर में गाड़ी में घोड़ा जुत गया, और दोनों सैर करने चले ।

विल्फ्रड० । किस रास्ते से चलना चाहिए ?

मिष्टर डा० । बाएँ हाथ को जो सड़क गई है और एप्सूली-कोर्ट पहुंची है उसी सड़क से चलना चाहिए ।

विल्फ्रड० । क्या आपसे और एप्सूली साहब से जान पहचान है ?

मिष्टर डा० । नहीं, किन्तु क्या आपने नहीं सुना कि उनका कारखाना नष्ट हो गया और वह बृहद् अट्टालिका जो कई पुश्त से उन्हीं के अधिकार में चली आती थी रुपया उधार देने वाले महाजनों के हाथ में है और दो एक महीने में वेची जायगी ?

विल्फ्रड० । मैंने कुछ नहीं सुना है। छः वर्ष पर तो यहाँ मेरा आना हुआ है । मैं यहाँ का हाल कुछ भी नहीं जानता ।

मिष्टर डा० । मैंने तुम्हारे चाचा से सुना है कि सुन्दर सुन्दर चित्र, दुष्प्राप्य पुस्तकें और बहुमूल्य पात्र आदि सब वस्तुएँ बेंची जायँगी । मैं चित्रों को बहुत पसंद करता हूं । इसी वास्ते चलता हूँ कि देखूं मेरे मन की भी कोई चीज वहाँ है कि नहीं ।

गाड़ी एप्सूली-कोर्ट के द्वार पर जा लगी और दोनों साहब उतरे । मकान के चारों ओर बगीचा लगा था जिसमें नाना प्रकार के वृक्ष और तरह तरह के फल तथा फूल शोभा-यमान थे । इमारत के सामने बेड्मिण्टन् खेलने का सुचिक्कण स्थान था, और पीछे एक बड़ा अस्तबल तथा गाड़ी-खाना बना हुआ था ।

एक नौकर जो महाजनों की ओर से मकान और बेंची जाने वाली वस्तुएँ दिखाने के वास्ते नियुक्त था आया, किन्तु मिष्टर डार्नले के मैले कुचैले कपड़े देखकर सोचने लगा कि इन लोगों मकान के भीतर जाने दूं कि नहीं, परंतु जब उसने विल्फ्रिड के भड़कीले वस्त्र देखे तो उसको कुछ भरोसा हो गया, और तब वह इनके साथ चारों ओर घूम घूम कर मकान की सैर कराने लगा। थोड़ी देर के बाद दोनों घर की ओर लौटे और वहाँ पहुंचकर भोजन तय्यार पाया।

भोजन के अनन्तर मिष्टर जॉन रुबन को लेकर पुनः खेत का काम देखने चले गए, और मिष्टर डार्नले एक आरामकुर्सी पर लेट समाचारपत्रों को उलट पुलट कर देखने लगे।

विल्फ्रिड ने 'मे' से बगीचे में चलकर सैर करने की इच्छा प्रगट की। वह तुरंत तय्यार हो गई और कपड़े बदलने लगी। विल्फ्रिड अपनी टोपी लेने गया। जब वह डार्नले साहब के शयनागार के निकट पहुँचा तो कमरे का द्वार खुला पाकर भीतर घुस गया। उसने मिष्टर डार्नले की पॉकेट-बुक टेबुल के नीचे पड़ी देखी। वह उसको उठाकर देखने लगा, और जल्द देखकर जहाँ रक्खी थी वहीं रख तुरंत बाहर निकल आया। विल्फ्रिड ने पॉकेट-बुक क्यों देखी? और उसमें क्या देखा? इसके बताने का अभी प्रयोजन नहीं है।

छठाँ प्रकरण।

विल्फ्रिड को आए एक मास व्यतीत हो गया और मिष्टर डार्नले जिन्होंने प्रतिज्ञा की थी कि एक महीने बाद मैं यहां से चला जाऊँगा अभी तक नहीं गए, बल्कि उस एक महीने से

भी तीन सप्ताह अधिक बीत गए परंतु उन्होंने जाने का नाम भी नहीं लिया ।

मिष्टर जॉन और उनकी पुत्री को मिष्टर डार्नले से बहुत स्नेह हो गया था, अतः वे भी किसी प्रकार नहीं चाहते थे कि वह हमसे पृथक् हों ।

मिष्टर डार्नले के स्वभाव में अब बहुत अन्तर पड़ गया अर्थात् अब उनमें वह चिड़चिड़ापन नहीं था । विल्फ्रिड प्रति दिवस डार्नले साहब को सैर कराने ले जाता और सन्ध्या समय मे के साथ बगीचे की सैर करता था । मिस-मिडिल्टन का सौदा खरीदने के वास्ते किङ्गस्-गेट जाना अब बहुत कम हो गया था, किन्तु जब वह वहाँ जाती तो रूबन उसके साथ जाता, और यही एक अवसर उस बेचारे के हर्ष तथा सुख का मिलता ।

रूबन बराबर चिन्तित रहता था और प्रेमानल से उसका हृदय जला करता था। उस बेचारे को भोजन से अरुचि हो गई थी और रात रात भर कोरी आँख बिता देता था। रात्रि दिवस वह मे-मिडिल्टन ही को याद किया करता था ।

एक दिन मिष्टर जॉन ने अपने भतीजे से खेत में चलने को कहा । यद्यपि वह उनके साथ जाना नहीं चाहता था क्योंकि वह समय मिस-मिडिल्टन के साथ सैर करने का था, किन्तु विवश हो उसे जाना ही पड़ा । जब दोनों चले गए तो मिष्टर डार्नले ने रूबन को बुलाकर कहा–" हम एक बात कहना चाहते हैं, लेकिन खबरदार किसी से न कहना (इसके अनन्तर उसकी ओर निर्निमेष नेत्रों से देखकर बोले) तुम मिस-मिडिल्टन को प्यार करते हो ? "

रूबन०। (लज्जित होकर) जी हाँ, ईश्वर ही जानता है कि मेरे चित्त का क्या हाल है।

मिष्टर डा०। और मिष्टर जॉन ने भी कहा है कि तुम बेटी का हाथ अपने हाथ में लेने की आशा रख सकते हो?

रूबन०। जी हाँ, किन्तु....

मिष्टर डा०। हम समझे। तुम अपने चेहरे से शोकचिन्ह के दूर करने का भी प्रयत्न कर रहे हो। यद्यपि तुम विल्फिड से द्वेष नहीं रखते, परंतु इस बात से डरते हो कि कहीं वह छीन न ले जाय। हमारी राय तो यह है कि तुम इस सन्देह और चिन्ता में न पड़े रहो किन्तु उससे पूछ लो कि वह भी तुमको चाहती कि नहीं। अपने आप को व्यर्थ संशय में रखना अच्छा नहीं है। मैं तुम्हारा हितेच्छु हूं। तुमने भी मेरी सेवा सुश्रूषा की है, इस कारण मैं तुम्हें यह सहज उपाय बताए देता हूं। 'मे' अभी बगीचे में जायगी, तुम वहाँ जाकर उससे साफ जवाब ले लो। अब जल्दी जाओ और जैसा हमने कहा है तैसा ही करो।

आध घण्टे के बाद मिस मिडिल्टन बगीचे में सैर करने गई और घूम घूम कर देखने लगी। इतने में रूबन उसके निकट पहुँचकर कहने लगा—"मिस—मिडिल्टन! आह! अब मुझसे नहीं रहा जाता। अब प्रणान्त का समय आ गया है। यदि आपके पिता ने जिनको मैं अपने पिता की जगह मानता हूं कुछ आशा न दिलाई होती तो मैं कदापि अपनी जिह्वा से इस प्रकार की बातें न निकालता। मैं जानता हूं कि मैं धनहीन हूं किन्तु आह! मेरे अधिकार में वह कोश है जो प्रेमधन से परिपूर्ण है। मैं यह भी जानता हूँ कि मेरे चरित्र पर कोई किसी प्रकार का सन्देह नहीं कर सकता है।"

मे०। रूबन! यह कैसी बात है? मैं तुम्हारी सौजन्यशीलता और कार्य्यपटुता से भली भाँति विज्ञ हूं।

रूबन०। क्या आप मुझको अपना दास बनाना स्वीकार करती हैं? बस एक और केवल एक ही शब्द से मेरी जान बचती है, हर्ष होता है, सुख मिलता है अथवा प्राणान्त होता है।

रूबन के इन वाक्यों को सुनकर मे चिन्तित हुई। वह कभी तो उसकी शोचनीय दशा देखकर आँसू बहाती, कभी विल्फ्रिड की सुन्दरता और भोली भाली बातें याद करती थी। बड़ा ही बारीक मामिला था। उसका चित्त विल्फ्रिड की मीठी मीठी बातों पर डावाँडोल हो गया था। उस समय यद्यपि बेचारे रूबन की दशा देखकर वह बेचैन हो गई, किन्तु उसका मन विल्फ्रिड की ओर मुड़ गया, फलतः बहुत ही धीमे स्वर में वह बोली,—"मुझको तुम्हारी दशा पर खेद है। मैं तुम्हें प्यार करती हूं, किन्तु वैसे नहीं जैसे कोई पत्नी अपने पति को चाहे।"

रूबन०। अच्छा (आंसू बहाकर) भगवान् आपको सुखी रक्खें।

यह कह कर रूबन वहाँ से चला गया। हम पहले ही कह चुके हैं कि मे-मिडिंल्टन बड़ी सरलहृदया थी। यह दृश्य देखकर वह बेचारी बहुत पछताई और एक वृक्ष के नीचे बैठकर रोने लगी। थोड़ी देर के बाद विल्फ्रिड आया और उसका हाथ पकड़ कर कहने लगा—"मेरी प्यारी मे! बताओ क्या हुआ? तुम रोती क्यों हो? मुझें भी अपने दुःख से सूचित करो। बोलो बोलो, तुम क्यों रो रही हो?"

दोनों देरतक एक दूसरे का मुंह देखते रहे। अन्त यह निश्चय हुआ कि अभी दोनों का प्रेम छिपाया जाय और मिष्टर

जॉन को न मालूम होने पावे।

निदान दोनो प्रेमी पेड़ के नीचे से उठे। भोजन का समय था, इसवास्ते दोनों उसी कमरे में गए जहाँ भोजन किया जाता था। वहाँ मिष्टर जॉन और मिष्टर डार्नले भी बैठे थे। रूबन नहीं था। मिष्टर जॉन ने नौकर को आज्ञा दी कि, " जाओ रूबन को बुला लाओ " परन्तु वह घर में भी नहीं मिला। मिष्टर जॉन ने कहा–" कदाचित वह खेत में गए होंगे। सब लोग प्रारम्भ करें, वह भी आते होंगे। "

भोजन समाप्त हो गया किन्तु रूबन अब तक नहीं आया। तब तो मिष्टर जॉन बहुत दुःखित हुए और मे-मिडिल्टन के मनोहर मुखड़े पर भी मलीनता छा गई। मिष्टर जॉन ने पुनः उसके कमरे में आदमी भेजा। आदमी एक पत्र जिसपर मिष्टर जॉन का नाम लिखा था लाया और बोला " यह पत्र उनके डेक्स पर रक्खा था। " मिष्टर जॉन उसको खोलकर पढ़ने लगे। लिखा था,—

" मेरे पूज्य स्वामी !

" इस दास पर आपने बड़ी कृपा की है। भगवान् आपको और आपकी प्यारी पुत्री 'मे' को उसका अवश्य बदला देंगे और सदैव प्रसन्न रक्खेंगे। मुझे उस बात की आशा थी जो कभी होनवाली नहीं थी, परन्तु अब वह आशा धूल में मिल गई, इसवास्ते मैं चाहता हूं कि और कहीं चला जाऊँ और वहीं परिश्रम कर अपना उदरपोषण करूँ। मेरे इस साहस पर आप दुःखित न होइएगा, मुझे विवश होकर आपका द्वार छोड़ना पड़ा है।

" आपका सदैव शुभचिन्तक—

रूबन। "

सातवाँ प्रकरण।

मिष्टर जॉन को इस पत्र के पढ़ने से अकथनीय शोक हुआ, और उनसे अधिक उनकी पुत्री शोकान्वित तथा चिन्तित हुई। मिष्टर डार्नले कभी कभी मे की ओर देखते थे और मन ही मन सारी कहानी स्मरणकर चुप हो रहते थे।

विल्फ्रिड को रूबन के चले जाने से बड़ी प्रसन्नता हुई और उसको विश्वास हो गया कि सुन्दरी मे का विवाह अब मेरे ही साथ होगा।

मिष्टर जॉन पत्र पढ़कर बहुत देर तक कुछ सोचते रहे, फिर कहने लगे—"बेचारा रूबन कहाँ गया? और क्यों गया? कल प्रातः-काल मैं उसे सब जगह ढुँढ़वाऊँगा।"

मिष्टर डार्नले यह कह कर कि—"महाशय! रूबन को आप उसी की इच्छा पर रहने दीजिए और उसके पीछे न पड़िए" उठे और अपने कमरे में चले गए। उनके पीछे सब उठ गए और टेबुल पर से भोजन के पात्र हटाए गए।

मिस-मिडिल्टन वहाँ से उठकर अपने कमरे में गई और बैठकर रो रो के कहने लगी—"हे अन्तर्यामी जगदीश्वर! यदि रूबन मेरे कारण गया हो तो मुझे क्षमा कर। मैं विवश हूं। प्रेम ने मुझे अन्धा बना दिया है। हाय! मैंने बेचारे को बहुत दुःख दिया।"

दूसरे दिन प्रातःकाल सबसे पहले डार्नले साहब मिष्टर जॉन के निकट गए और बोले—"मैं आपके उपकारों और सद्व्यवहार के कारण आपका बेमोल का दास हो गया, अतएव आपकी हानि और लाभ को अपनी ही हानि तथा

लाभ समझता हूं, सुतरां मैं वही बात जो कल रात्रि समय कह चुका हूं फिर कहता हूं कि आप रूबन के वास्ते चिन्ता न कीजिए। कोई ऐसा ही कारण होगा जिससे वह चला गया है। वह होनहार और समझदार लड़का है, अपने बाहुबल से बिना किसी प्रकार का कष्ट सहन किए खाने भर रुपया पैदा कर लेगा।"

इस बातचीत का मिष्टर जॉन पर बड़ा प्रभाव पड़ा। अन्त उन्होंने रूबन की चिन्तना छोड़ दी। इस काम से निपट कर मिष्टर डार्नले बगीचे में जाकर मिस-मिडिल्टन की बाट जोहने लगे और जब वह आई तो उसके निकट जाकर बोले- "मिस-मिडिल्टन! मुझको तुमसे कुछ कहना है।"

मे०। (घबराकर) कहिए?

मिष्टर डा०। पहले यह बताओ कि अभी तो तुम्हारे काम का समय है यहाँ क्यों चली आई हो?

मे०। पिताजी के निकट जाती हूं, उनसे कुछ काम है।

मिष्टर डा०। क्यों? क्या काम है? यद्यपि ऐसी बातों में हस्तक्षेप करना सभ्यता के विरुद्ध है, किन्तु जब हम आपके शुभेच्छु हैं तो हमसे छिपाने की भी कुछ आवश्यकता नहीं है।

मे०। उनसे कुछ कहना है।

मिष्टर डा०। कदाचित् रूबन के विषय में (उसका मुँह निहारकर) क्या यह नहीं है?

मे०। जी हाँ। (सजलनयन से) मिष्टर डार्नले साहब! मैंने बहुत बड़ा अपराध किया है, मैंने अपने पूज्य पिता की आज्ञा भङ्ग की है। भगवान्! अब मैं क्या करूं? पिता जी ने कहा था कि रूबन को अपना पति समझना, किन्तु मैंने वैसा नहीं किया, यही कहने पिता जी के पास जा रही हूं।

मिष्टर डा०। बस केवल इतना ही कहोगी कि और भी कुछ ?

मे०। हाँ, एक और भी रहस्य है।

मिष्टर डा०। बस मैं समझ गया, तुम यही कहोगी कि 'मैंने रूबन से इसवास्ते इनकार किया कि मेरा मन विलिफ्रड पर आ गया है।'

मे०। जी हाँ, बस यही। हे राम ! अब मैं क्या करूं ?

मिष्टर डा०। अस्तु, जैसी होतव्यता थी वह हुई। अब मेरी सम्मति यह है कि इस विषय में अभी तुम अपने पिता से कुछ न कहो, इसवास्ते कि अभी उनको रूबन के चले जाने का रंज है, ऐसी दशा में यदि वह सुन लेंगे कि तुमही उसके चले जाने का कारण हो तो शोक से उनकी न जाने कैसी दशा हो जायगी, अतएव अब यही उचित है कि चुप हो रहो।

मे०। आपकी निष्पक्ष सम्मति से मैं बहुत सन्तुष्ट हुई। मैं आपकी बाधित हूं कि आपने ऐसे बारीक समय में मुझ अभागी की रक्षा की। आप जो आज्ञा देते हैं मैं वहीं करूंगी।

मे इतना कह कर अपने कमरे की ओर चली गई और अपने काम में लवलीन हुई। दो दिन बीत गए, किन्तु रूबन का कुछ पता न लगा। तीसरे दिन शनिवार था, जिस दिन नियमानुसार मिस-मिडिल्टन किङ्गस्-गेट जाया करती थी परंतु रूबन के न होने के कारण विवश हो स्वयं मिष्टर जॉन को उसके संग जाना पड़ा। इन दोनों के जाने के पश्चात् मिष्टर डार्नले एक खिड़की के निकट एक आराम-कुर्सी पर लेट गए और विलिफ्रड अपने बेकाम का समय बिताने के अभिप्राय से बगीचे की ओर चला। द्वार पर एक स्त्री मिली जिसे देखते ही

उसका चेहरा पीला पड़ गया और वह घबरा घबरा कर मिष्टर डार्नले के कमरे की ओर देखने लगा, किन्तु उसने समझा कि वह सो रहे हैं। वह स्त्री रूपवती थी, किन्तु शरीर कुछ लाँबा था और हाथ पाँव पतले पतले सूखे से थे। तात्पर्य्य यह कि वह युवतियों में गिनी जाने योग्य थी।

द्वार के निकट आकर वह चाहती थी कि भीतर प्रवेश करे कि इतने में विल्फ्रिड से उसकी मुलाकात हो गई। विल्फ्रिड उसको लेकर घर के भीतर आया और कमरे का द्वार खोलकर कहने लगा—"भीतर चलो, लेकिन देखो ईश्वर के वास्ते धीरे धीरे बातें करना।"

मिष्टर डार्नले जो खिड़की में से यह सब दृश्य देख रहे थे खिड़की से उठ और उस कमरे के पीछे जहाँ दोनों बैठे थे जा छिपे और दोनों के प्रत्येक शब्द को ध्यान देकर सुनने लगे।

आठवाँ प्रकरण।

विल्फ्रिड के साथ कमरे में जाकर वह औरत जिसका नाम रोसालिण्ड था एक कुर्सी पर बैठ गई तो दोनों में बातें होने लगीं।

विल्फ्रिड०। यहाँ तुम्हारा कैसे आना हुआ?

रोसालिण्ड। गरीबी और रुपये कि आवश्यकता मुझको यहाँ खींच लाई।

विल्फ्रिड०। रोसालिण्ड! तुम मेरा हाल भली प्रकार जानती हौ। मेरे पास कुछ नहीं है, क्या दूं? इसके सिवाय हमारे तुम्हारे जो प्रतिज्ञा हुई थी तुम उसके विपरीत चलती हौ।

रोसालिण्ड। जब पहले तुम्हीं ने प्रतिज्ञा भङ्ग की तो मैं

कैसे चुप रह सकती हूं ? क्या मैं चुपचाप तुम्हारे साथ विवाह करने पर राजी नहीं हो गई थी ? क्या मैंने.....

विलिफ्रण्ड०। बस करो बस करो। ईश्वर के वास्ते जरा धीरे बोलो।

रोसालिण्ड। वाह वाह ! तुम्हें लज्जा नहीं आती ! मुझको देखो कि अनेक प्रकार के कष्ट भोगे, संकट में पड़ी, लेकिन सदैव तुम्हारी इच्छा के अनुकूल काम करती रही, उसका यह फल पाया कि तुमने अपने से मुझको पृथक् कर दिया।

विलिफ्रड०। ऐसा करना तो तुम्हीं ने स्वीकार किया था।

रोसालिण्ड। हाँ मैंने स्वीकार किया था, लेकिन क्यों ? तुमने कसम खाया था कि हमारे पास एक पैसा भी नहीं है, किन्तु अब तुम्हारे कपड़ों के देखने से प्रतीत होता है कि जो कुछ तुम कहते थे वह असत्य था।

विलिफ्रड०। तुमको भली प्रकार ज्ञात है कि मैं तुम्हारे ही अपव्यय के कारण दरिद्र हो गया हूं।

रोसालिण्ड। अब मुझपर दोषारोपण करते हो ? क्या मेरे ही वास्ते पृथक् घर लिया था ? एक "एक्ट्रेस" को अपनी अर्द्धाङ्गिनी बना कर खुद अपने घर में रखने में तुम्हें लज्जा आती थी ?

विलिफ्रड०। इस वृथापवाद से क्या लाभ ? अब जो तुम चाहती हो वह कहो।

रोसालिण्ड। हम पहले ही कह चुके हैं कि हमें रुपये की बड़ी आवश्यकता है। हम तो बस रुपया चहते हैं, और भविष्य के वास्ते भी कुछ प्रबन्ध कर दिया जाय।

विलिफ्रड०। और यदि ऐसा न हुआ तो क्या करोगी ?

रोसालिण्ड। सर्वत्र अपने को तुम्हारी पत्नी प्रसिद्ध करूंगी और रोटी कपड़े का दावा करूंगी।

विल्फ्रिड०। अच्छा अब मैं अपना अभिप्राय स्पष्ट प्रगट किए देता हूं।

रोसालिण्ड। हाँ, यही उचित है, क्योंकि मैं जानती हूं कि अब तुमको मुझसे एकदम घृणा है, परन्तु अब तो मुझको भी इसकी कुछ पर्वाह नहीं है, मैं तो रुपये की भूखी हूं।

विल्फ्रिड०। सुनो रोसालिण्ड! अभी तो मेरी अवस्था बहुत ही खराब है। यदि मैं किसी धनाढ्य युवती को अपनी पत्नी बना सका तो तुमको बहुत कुछ दूंगा। तब तक यदि मेरी स्थिति के अनुसार कुछ लेकर चली जाओ और उस विवाह का हाल किसी पर प्रगट न करो तो मैं रुपया देने को तय्यार हूं।

रोसालिण्ड। अच्छा मैं तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करती हूं।

मिष्टर डार्नले ने कमरे के पीछे से सारी बातें सुन लीं और शीघ्रता से अपने कमरे में जाकर पूर्ववत् लेट रहे। पति पत्नी में लेन देन हो जाने के पीछे विल्फ्रिड ने अपनी गुप्त-पत्नी को घर के बाहर तक पहुंचा दिया और लौटती समय देखने लगा कि मिष्टर डार्नले क्या करते हैं। उनको उसी प्रकार सोते देख कर वह मन में बहुत प्रसन्न हुआ। मिष्टर जॉन किङ्स्-गेट गाँव से आए और भोजन करके जमीन्दारी का काम देखने चले गए। मिस-मिडिल्टन गृहस्थी का काम करने लगी। भोजन के कमरे में केवल विल्फ्रिड और मिष्टर डार्नले रह गए तो उन दोनों में इस प्रकार बातचीत होने लगी,—

मिष्टर डा०। तुम्हारा लन्दन जाने का कबतक इरादा है?

विल्फ्रिड०। जल्दी तो नहीं जाऊँगा, लेकिन क्यों, क्या

आपका कोई काम है ?

मिष्टर डा०। मुझको कुछ "कागज-पत्तर" भेजने हैं, और उनको हरएक आदमी के हवाले नहीं कर सकता। तुम जाते तो तुम्हें दे देता।

विल्फ्रिड०। मैं आपका काम करने को तय्यार हूं।

मिष्टर डा०। क्या केवल मेरे काम के वास्ते चले जाओगे?

विल्फ्रिड०। जी हां, जब आप मेरे चाचा के मेहमान हैं, तो आपकी सेवा करना मेरा धर्म्म है। कहिए, कब जाऊं?

मिष्टर डा०। कल प्रातःकाल।

विल्फ्रिड०। मैं तय्यार हूं।

मिष्टर डा०। लेकिन मैं चाहता हूं कि यहां कोई न जानने पावे कि मैंने तुमको भेजा है।

विल्फ्रिड०। यद्यपि मुझको झूठ बोलने का अभ्यास नहीं है, परन्तु आपके वास्ते कुछ हर्ज नहीं। मैं कहूंगा कि अपने एक आवश्यक के वास्ते जा रहा हूं।

मिष्टर डार्नले ने धन्यवाद दिया, और दोनों एक दूसरे से पृथक् हुए। रात को भोजन के समय विल्फ्रिड कहने लगा-"कल सुबह मैं दो चार दिन के वास्ते यहां से जाऊंगा।" मिष्टर जॉन बोले, "क्या यहां रहते रहते घबरा गए? कदाचित् यहां तुम्हारा जी नहीं लगता है।"

विल्फ्रिड०। जी नहीं, यहां रहने से अधिक सुख की कौन सी बात हो सकती है? मुझे एक आवश्यक काम के लिए जाना है।

मिष्टर डा०। मैं समझता हूं कि आज तीसरे पहर को डॉकवाला चिट्ठी दे गया है, कदाचित् उसी वास्ते तुमको जाने की जरूरत पड़ी है।

विल्फ्रिड०। जी हां, ऐसा ही है।

प्रातःकाल नित्यकृत्य से निपट कर विल्फ्रिड नीचे उतरा। मिष्टर डार्नले उसको आपने कमरे में ले गए और कहने लगे—"इस कष्ट के वास्ते जो आप मेरे लिए उठाते हैं मैं पुनः आपको धन्यवाद देता हूं, परन्तु कृपाकर जाने में जो कुछ खर्च हो मुझसे ले लीजिए।"

मिष्टर डार्नले ने यह कह रुपये गिनकर सामने रख दिए और एक पत्र हाथ में देकर कहा—"यह पत्र मिष्टर जान्सन को जो Gray's Inn Square नामक मोहल्ले में रहते हैं दे देना।"

यद्यपि विल्फ्रिड ने रुपया लेने से इनकार किया, किन्तु मिष्टर डार्नले ने एक न सुनी और रुपया दे ही दिया।

जलपान के उपरान्त गाड़ी आई और विल्फ्रिड रवाना हुआ। यह गाड़ी उसको किङ्गस्-गेट तक पहुंचावेगी और वहां से उसको भाड़े की गाड़ी पर जाना होगा। रूबन की अनुपस्थिति के कारण मिष्टर जॉन विल्फ्रिड को वहां तक पहुंचाने गए। अब केवल मिस-मिडिल्टन और मिष्टर डार्नले कमरे में रह गए। मिष्टर डार्नले मिस-मि० से यों बातें करने लगे—

मिष्टर डा०। मिस महाशया! मुझको आपसे कुछ आवश्यक बातें कहनी हैं।

मे०। क्या?

मिष्टर डा०। अब तुम अपने चित्त को सम्हालो। शोक और चिन्ता से कुछ लाभ नहीं होगा। विल्फ्रिड कदापि इस योग्य नहीं है कि तुम उसके साथ विवाह करो।

मे०। (सजन नयनों से) क्यों? क्या हुआ?

मिष्टर डा०। सुनो मैं सारी कहानी तुमसे कहता हूं, जिसमें

तुम विल्फ्रिड का ध्यान एकबार ही चित्त से दूर कर दो। उसका चरित्र उससे भी बहुत खराब है जैसा कि तुम सबको मालूम हुआ था। अब उसके पास कुछ भी नहीं है। इसके अतिरिक्त उसने सबसे छिपाकर एक विवाह भी किया है। तुम विश्वास मानो, मैंने ठीक पता लगाया है। मैंने उसको इसी वास्ते लन्दन भेजा है। अब वह यहां नहीं आवेगा। उस दुष्ट का सब हाल मैं तुम्हारे पिता से भी कह दूंगा, किन्तु तुम्हारा भेद न खुलने पावेगा।

मे०। आपने मुझको बड़ी आफत से बचा लिया, अन्यथा जन्म भर मुझको दुखी रहना पड़ता। ईश्वर को सहस्र सहस्र धन्यवाद हैं कि मैं आपके सदुपदेश के प्रभाव से बच गई।

मे के मुख से ये बातें सुनकर मिष्टर डार्नले अतीव प्रसन्न हुए और उसे अपनी बेटी की तरह प्यार करके कहने लगे-"तुम्हारी सरलता और योग्यता को मैं खूब जानता हूं। अपने मुख पर से शोकचिन्ह मिटाने का प्रयत्न करो। देखो, कोई यह न जानने पावे कि तुमको किसी बात की चिन्ता वा घबराहट है।"

नवां प्रकरण।

विल्फ्रिड को गए एक महीना बीत गया परन्तु न वह आज आता है न कल। उसकी कोई चिट्ठी भी नहीं आई। मिष्टर डार्नले ने मिष्टर जॉन से उसकी सारी चतुराई और गरीबी का हाल कह डाला, जिसको सुनकर उनको बहुत दुःख हुआ, किन्तु वह सोचने लगे कि डार्नले साहब यह सब भेद कैसे जान सके?

मिस-मिडिलन विल्फ्रिड का ध्यान एकबार ही चित्त से

दूर कर देने का प्रयत्न करती रही किन्तु यह बात ऐसी न थी जो तत्काल भूल जाती । मे के शरीर में उमङ्ग के स्थान पर अब शिथिलता आ गई थी ।

इस महीने में मिष्टर डार्नले के नाम कई पत्र आए और मे-मिडिल्टन जब किङ्गम्-गेट गांव को जाते तो वह एक पुलिन्दा जिसपर " मिष्टर जान्सन एटर्नी " का नाम लिखी होता पोष्ट-आफिस में देने के लिए उसको अवश्य देते । मिष्टर जॉन और उनको बेटी को आश्चर्य्य था कि जब मिष्टर डार्नले का कोई शत्रु वा मित्र है ही नहीं तो वह पत्रव्यवहार किससे करते हैं और क्यों करते हैं !

मिष्टर डार्नलेको मिष्टर जॉन का मेहमानहुए चार महीने हो गए, अब सब लोग उनसे इतने हिल मिल गए थे कि वह भी उसी वंश से जान पड़ते थे ।

एक दिन प्रातःकाल मिष्टर जॉन और उनकी लड़की किङ्गम्-गेट से लौट आने पर मिष्टर डार्नले से मिली । मिष्टर जॉन ने उनसे पूछा, " आपने कुछ और भी सुना ? वह एप्मूली-कोर्ट जिसको आप देखने गए थे बिक गया । "

मिष्टर डा० । यह भी मालूम हुआ कि किसने खरीदा ?

मिष्टर जॉन । यह तो अभी नहीं मालूम हुआ । यह कार-रवाई बड़ी जल्दी में हुई हैं । मेरी समझ में तो कुछ भी नहीं आया ।

मिष्टर डा० । कदाचित् बीमे की बातचीत् लन्दन में हुई । इसवास्ते कि मैने किसी समाचारपत्र में देखा था कि उसकी बात-चीत लन्दन में एक एजेण्ट से करनी चाहिए । सम्भव है कि अभी वहां से खबर न आई हो कि किसने खरीदा ।

मिष्टर जॉन। हां बस यही बात है। वहां तो लोग कहते हैं कि आज सायंकाल में नए मालिक एप्सूली-कोर्ट में आनेवाले हैं। मैं समझता हूं कि कल प्रातःकाल वह एडिङ्गटन-गिर्जे में वह आ जायँगे।

मिष्टर डा०। एडिङ्गटन गिर्जा कहां है?

मिष्टर जॉन। यह एप्सूली-कोर्ट के गिर्जे का नाम है। यदि आपकी इच्छा हो तो चलिए कल सुबह हम सब भी उसी गिर्जे में चलें, क्योंकि "किङ्गस्-गेट-गांव" का गिर्जा यहां से बहुत दूर पड़ता है।

मिष्टर डा०। (मुस्कुरा कर) कदाचित् आपको एप्सूली-कोर्ट के नए मालिक के देखने की बड़ी उत्कण्ठा है।

मिष्टर जॉन। जी हां, सब ही को अपने पड़ोसी का ध्यान रहता है।

दूसरे दिन मिष्टर जॉन, उनकी लड़की और मिष्टर डार्नले पैदल 'एडिङ्गटन' गिर्जे को रवाना हुए। जब पास पहुँचे तो बड़ी भीड़ देखी, और बराबर गाड़ियां चली आती थीं। जान पड़ता था कि मानो उस गांव के सब आदमी चले आते हैं।

मिष्टर जॉन बोले, "चलो हम सब भी जल्दी से बैठ जायं नहीं तो जगह कठिनाई से मिलेगी।"

गिर्जे के भीतर इन लोगों को स्थान मिल गया। भीड़ का यह हाल था कि एक पर एक गिरे पड़ते थे, और पाँव धरने की जगह नहीं थी। बस वही जगह खाली थी जो एप्सूली-कोर्ट के नए मालिक के बैठने के वास्ते नियत कर दी गई थी।

पूजा समाप्त होने पर इन लोगों का छोटा दल बाहर निकला तो सुनने में आया कि मालिक अबतक नहीं आए

और नहीं मालूम कि कबतक आवेंगे। विशेष आश्चर्य्य की बात तो यह थी कि वहां के नौकरों में से भी कोई अपने मालिक का नाम नहीं जानता था।

तीसरे पहर मिस-मिडिल्टन और मिष्टर डार्नले मैदान में सैर करने चले। जब थोड़ी दूर निकल गए तो मिष्टर डार्नले ने मे को एक खेमा दिखाया जिसमें तीन स्त्रियां बैठी रमल के पासे फेंक रही थीं।

मिष्टर डा०। कदाचित् वे सब भविष्य का हाल बता देती हैं।

मिस-मि०। क्या आपको उनकी बातों पर विश्वास है?

मिष्टर डा०। हां।

मिस-मि०। (आश्चर्य्य से) यह कैसे सम्भव है कि आप उनकी बातों पर विश्वास कर लें?

मिष्टर डार्नले ने इसका उत्तर नहीं दिया, परन्तु कहने लगे, " बाल्यावस्था में क्या तुमने कभी इस प्रकार की औरतों को अपना हाथ नहीं दिखलाया? "

मिस-मि०। (मुस्कुरा कर) मुझे याद आता है कि जब मैं नौ-दश वर्ष की थी, तो मैंने एक ऐसी ही औरत को हाथ दिखलाया था। उसने बहुत कुछ कहा था, लेकिन मैंने उन सब बातों को अपने चित्त से भुला दिया।

मिष्टर डा०। अच्छा बताओ उसने क्या कहा था?

मिस-मि०। (लज्जित होकर) यदि आपकी इच्छा है तो सुनिए। वह कहती थी कि तुम बहुत धन की स्वामिनी होओगी, गाड़ी घोड़े दौड़ाती फिरोगी, और सहस्रों दास दासी तुम्हारी सेवा कर अपना पेट पालेंगी।

मिष्टर डा०। क्या बस इतना ही कहा था?

मिस-मि० । (हँसकर) नहीं इतनाही नहीं, किन्तु आप मुझको मूर्ख न बनाइए, मैं उन बातों पर विश्वास नहीं करती।

दोनों चुप होकर टहलने लगे, लेकिन जब मैदान के छोर पर पहुंचे तब मिष्टर डार्नले कुछ ऐसी बातें करने लगे कि मिस-मिडिल्टन ने समझा कि वह पागल हो गए हैं ।

दशवां प्रकरण ।

मिस-मिडिल्टन को निश्चय हो गया कि मिष्टर डार्नले की बुद्धि बहँक गई है, इस कारण कि वह सहसा कह उठे, " मिस-मिडिल्टन! तुमने उस समय पूछा था कि तुम उन भविष्य की बातें कहनेवाली स्त्रियों को सत्यवक्ता जानते हौ कि नहीं ? अब मैं उस बात उत्तर देता हूं । मैं उनकी बातों पर विश्वास करता हूं। तुम भी सच जानो, विश्वास मानो कि उस स्त्री ने जिसको तुमने बाल्यावस्था में हाथ दिखाया था जो कुछ कहा था सब सच होगा । मैं शपथपूर्व्वक कह सकता हूं कि वे सब बातें पूरी होंगी। उन बातों को अब झूठ और व्यर्थ की बातें न समझो और यह सोचो कि जब तुमको धन मिलेगा तो तुम उसको किस प्रकार व्यवहार में लाओगी । (दम लेकर) मिस-मिडिल्टन ! मुझको पागल न जानो । मेरा जी गवाही देता है कि वह भविष्यद्वाणी शीघ्र ही प्रत्यक्ष होनेवाली है । "

मिस-मि० । महाशय ! आपको उचित नहीं है कि इस प्रकार की व्यर्थ बातें एक अल्पवयस्का बालिका के मस्तिष्क में भर दें । ईश्वर ने दया करके मुझको थोड़ी बहुत बुद्धि और विवेकशक्ति अवश्य दी है । इन बातों की ओर मेरा ध्यान आकर्षित न होगा, किन्तु मैं अनुमान करती हूं कि आपने ये

बातें मेरी जाँच के लिए की होंगी।

मिष्टर डा०। (हंसकर) हां मेरा अभिप्राय यही था। अब तुमसे एक बात चाहता हूं।

मिस-मि०। कहिए।

मिष्टर डा०। लेकिन पहले उसके पूरा करने की प्रतिज्ञा करो। तुम मेरा स्वभाव जानती हो। मैं वह बात नहीं चाहता जिसको तुम कर न सको। खासकर ऐसी अवस्था में जबकि मैं यहां से बहुत जल्द चला जाने वाला हूं।

मिस-मि०। (साश्चर्य) क्या आप जल्दी चले जायँगे?

मिष्टर डा०। हां, अब मैं तुम्हारे पिता को उनके घर में रहने का कष्ट नहीं दे सकता।

मिस-मि०। ऐसी बात न कहिए। आप कदापि ऐसा न समझिए कि आपके रहने से उनको कष्ट होता है।

मिष्टर डा०। मैं खूब जानता हूं कि उनकी मुझ पर बड़ी कृपा है और मेरे रहने से उनको कष्ट नहीं होता है।

मिस-मि०। फिर चले जाने की बात क्यों करते हैं?

मिष्टर डा०। तो क्या तुम चाहती हो कि मैं न जाऊं?

मिस-मि०। निस्सन्देह, हम सब आपको अपना शुभेच्छु समझते हैं और मुझे निश्चय कि आपके चले जाने से पिता जी को बहुत दुःख होगा।

मिष्टर डा०। किन्तु मुझे स्मरण है कि किसी समय मैंने तुम्हारे साथ कटुवाक्यों का व्यवहार किया था।

मिस-मि०। यह ठीक है, किन्तु अब आपकी कृपा और आपके सद्व्यवहार ने उन बातों को एकबार ही भुला दिया। अच्छा यह तो कहिए कि आपके जाने का हाल पिता जी को

मालूम है कि नहीं ?

मिष्टर डा०। नहीं, कल मैं उनसे कहूंगा।

मिस-मि०। आप कहां जायँगे ?

मिष्टर डा०। (मे की ओर कनखियों से देखकर) मुझ सा आदमी कहां जा सकता है ? सिवाय इसके कि एक जगह से दूसरी जगह।

मिस-मि०। क्या आपके वास्ते यहां जगह नहीं है ?

मिष्टर डा०। तुम्हारे हृदय में बहुत दया है, परन्तु अब चाहे जो कुछ कहो मैं जल्दी चला जाऊंगा, किन्तु मुझे एक बात की इच्छा है।

मिस-मि०। वह क्या ?

मिष्टर डा०। तुम उसके पूरा करने की प्रतिज्ञा करती हो ?

मिस-मि०। जी हां, अवश्य।

मिष्टर डा०। अच्छा फिर तुम मुझको सिड़ी या पागल तो न बनाओगी ? परन्तु इसको मुझको कुछ पर्वाह नहीं। तुम्हारे जी में जो आवे वही समझो। मैं चाहता हूं कि उस स्त्री को तुम अपना हाथ फिर दिखालाओ जो उस खेमे में बैठी है।

मिस-मिडिल्टन ने देखा कि इसमें कुछ हर्ज की बात नहीं है, अतः उनका कहना तुरन्त स्वीकार कर लिया। दोनों उस ओर चले जहां खेमा गड़ा था। जब पास पहुंचे तो उनमें से एक स्त्री खेमे के बाहर निकल आई और कहने लगी, " इतना कष्ट उठाया है तो कृपाकर भीतर चलिए और अपना हाथ दिखलाइए। " मिस-मि० खेमे के भीतर गई और अपना हाथ दिखलाने लगी। उन स्त्रियों में से एक आगे बढ़ आई और हाथ को बड़े ध्यान से देखकर कहने लगी, " आप कुछ

दिन में बहुत बड़ी सम्पत्ति पावेंगी। असंख्य धन हाथ लगेगा। बहुमूल्य गाड़ी घोड़े आपके अस्तबल में बँधे रहेंगे।"

मिस-मिडिल्टन ने इतना सुनकर हाथ खींच लिया और डार्नले साहब की ओर देखने लगी। मिष्टर डार्नले ने सोचा कि कदाचित् वह अब हाथ दिखाना नहीं चाहती, अतः बढ़कर चुपके से उसके कान में कहा, "इससे क्या होता है? तुम प्रतिज्ञा कर चुकी हो कि मेरी यह इच्छा पूर्ण करोगी। सो अब उसका निर्वाह करो।"

मिस-मि० ने दिखलाने के लिए पुनः हाथ बढ़ाया। उस स्त्री ने देर तक सोच समझ कर कहा, "आपका मन किसी पर आ गया था, परन्तु वह आपकी बराबरी के योग्य न निकला। अब एक और व्यक्ति आपके वास्ते हैरान है, और वही अन्त में आप का स्वामी और पति होगा।"

अब मिस-मिडिल्टन को उन औरतों की बातों का कुछ कुछ विश्वास हो चला, और मन में कहने लगी, "हो सकता है कि यह विद्या सच हो।" किन्तु वह सौन्दर्य-स्वर्ग की सुकुमारी, सरोजनयनी, सरसमयी, सुरीली, स्थिरचित्त सरल-हृदया सुन्दरी अपने सौभाग्य का समाचार सुनकर सम्पत्ति-इच्छुक सुन्दरियों के समान सुखी नहीं हुई, क्योंकि वह लावण्य-मयी ललना लालचिन नहीं थी। डार्नले साहब ने अपने जेब से एक रुपया निकालकर उस भविष्यद्वक्त्री स्त्री के हाथ में दिया और घर को लौट चले। रास्ते में दोनों चुपचाप और अपने २ ध्यान में डूबे हुए चले जाते थे। जब घर के पास पहुंचे तब डार्नले साहब ने कहा, "उचित नहीं है कि ये बातें तुम्हारे पिता से कही जायँ।" मिस-मिडिल्टन ने भी इस राय को

पसन्द किया और अपने पिता से इस विषय में कुछ भी नहीं कहा।

दूसरे दिन प्रातःकाल जलपान के समय मिष्टर डार्नले ने मिष्टर जॉन से कहा, " महाशय ! आज मैं आपसे बिदा होना चाहता हूं।"

मिष्टर जॉन। (आश्चर्य्य से) क्या यहां से चले जाइएगा ? क्या किसी तरह का आपको कष्ट हुआ या किसी बात का दुःख हुआ ?

मिष्टर डा०। नहीं, मैं यहां बहुत सुख से रहता हूं। आपकी दया और कृपा का मैं किस प्रकार वर्णन करूं। जगदीश्वर आपके परोपकार का उचित फल देंगे।

मिष्टर जॉन। अच्छा फिर कब तक आइएगा ? मैं अनुमान करता हूं कि आठ दश दिन में, बहुत २ पन्द्रह दिन में आप लौट आवेंगे।

इतने में मिष्टर जॉन के एक नौकर ने उनके नाम का एक पत्र लाकर हाथ में दे दिया। मिष्टर जॉन उसको उच्चस्वर से पढ़ने लगे। पत्र में यह लिखा था,—

१०-८-१७८०.
" एप्सूली-कोर्ट "

" महाशय—

" कल तीसरे पहर को तीन बजे आपकी और आपकी पुत्री की दावत है। यह दावत एप्सूली-कोर्ट के नए मालिक से मुलाकात कराने के लिए की गई है। यदि आपके घर में आपके कोई मित्र वा सम्बन्धी हों तो उनको भी साथ लेते आइएगा।

" भवदीय—
" टामस बेकर।"

मिष्टर जॉन इस पत्र को पढ़कर कहने लगे, "यह पत्र एप्मूली-कोर्ट के मैनेजर के पास से आया है। मिष्टर डार्नले! अब तो आपका जाना नहीं हो सकता।"

मिष्टर डा०। आपकी खातिर से मुझको यह भी स्वीकार है।

मिष्टर जॉन। (प्रसन्न होकर) एक दिन आपके साथ और रहने का अवसर प्राप्त हुआ, लेकिन आपने हमारे पहले प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। कहिए, कब तक लौट आइएगा?

मिष्टर डा०। यदि आप लोगों मेरे आने से हर्ष हो तो मैं प्रण करता हूं कि आवश्य आऊंगा।

इतना कहकर मिष्टर डार्नले उठे और अपने कमरे में चले गए। मिष्टर जॉन जमीन्दारी का काम देखने गए और मे-मिडिल्टन घर का काम काज करने लगी।

ग्यारहवां प्रकरण।

मिष्टर जॉन, उनकी बेटी और मिष्टर डार्नले तीनों तीन बजे फिटन गाड़ी पर सवार होकर एप्मूली कोर्ट को रवाना हुए। मिष्टर जॉन अपने सबसे अच्छे कपड़े पहिने हुए थे और उनकी पुत्री ने बहुमूल्य और भड़कीले वस्त्र पहिनकर अपने को बनाया सँवारा था, किन्तु आश्चर्य्य की बात थी कि मिष्टर डार्नले वेही कपड़े पहिने हुए थे जिनको पहिन कर वह पहले पहल सड़क पर पाए गए थे। यहां तक कि उन्होंने बालों में कंघी तक नहीं की। यद्यपि मिष्टर जॉन को उनकी यह चाल पसंद नहीं आई किन्तु सभ्यता के विरुद्ध जानकर वह कोई बात मुंह से निकालने का साहस न कर सके।

सबने समझा था कि वहां गाड़ियों और मेहमानों की भीड़ भाड़ होगी लेकिन अभी तक एक भी गाड़ी नहीं आई थी।

वहां पहुंचकर तीनों आदमी गाड़ी से उतरे और मिष्टर बेकर से जो अपने बहुत से नौकरों को लेकर जिनके शरीर पर बहुमूल्य वर्दियां थीं अगवानी के लिये आए थे उनकी मुलाकात हुई। जॉन साहब ने मिष्टर बेकर से कहा, " आपके लेखानुसार मैं अपने मित्र मिष्टर डार्नले को साथ लेता आया। "

मिष्टर बेकर और उन दोनों नौकरों ने मिष्टर डार्नले को भी सलाम किया, किन्तु उनके मैले कुचैले वस्त्र देखकर सब एक दूसरे का मुंह देखने लगे कि मिष्टर जॉन ऐसे व्यक्ति को अपने साथ क्यों लाए? मिष्टर जॉन और उनकी पुत्री नौकरों का यह हाल देखकर बहुत दुःखित हुई, परन्तु मिष्टर डार्नले ने इन बातों पर ध्यान भी नहीं दिया।

मिष्टर जॉन। (मिष्टर बेकर से) क्या मालिक-मकान आ गए?

मिष्टर बे०। नहीं महाशय! किन्तु मैं समझता हूं कि अब कुछ देर में आया ही चाहते हैं।

मिष्टर जॉन०। अन्दर तो बहुत से मेहमान इकट्ठे होंगे?

मिष्टर बे०। आपके सिवाय अब तक कोई नहीं आया। केवल छः ही आदमियों की तो वहां बुलाहट है। शेष लोग बहुत दूर से आनेवाले हैं। पाँच बजे भोजन होगा, अभी बहुत समय है।

मिष्टर जॉन०। आश्चर्य की बात है कि इस प्रान्त के लोगों में से केवल मैं ही बुलाया गया! मिष्टर बेकर! क्या निमन्त्रण आपकी ओर से दिया गया था।

मिष्टर बे० । नए मालिक के "एटर्नी" की ओर से। वह इस समय मकान के भीतर वर्तमान हैं।

मिष्टर जॉन । कृपाकर यह तो बताइए कि आपके नए मालिक का नाम क्या है? आश्चर्य है कि जिनसे मिलने के वास्ते हमलोग आए हैं उनका नाम तक नहीं जानते!

मिष्टर बे० । आपका न जानना तो कोई आश्चर्य्य की बात नहीं है, क्योंकि हम लोग भी अभी तक नहीं जानते।

मिष्टर जॉन । आश्चर्य्य! कदाचित् आपसे हमको निमन्त्रित करने में भूल हुई। अस्तु, यह बताइए कि वह एटर्नी महाशय कहां हैं?

मिष्टर बे० । वह पत्र आदि देखने में लवलीन हैं और मना कर दिया है कि इस समय उनके पास कोई न जाय।

मिष्टर जॉन० । जो हो, वह हमसे मिलने अवश्य आवेंगे। (फिर अपनी पुत्री की ओर देखकर बोले) हमारी बुद्धि कुछ काम नहीं करती। क्या करें? चलो लौट चलें।

मिष्टर बेकर यह बात सुनकर बोले, "आप कुछ संशय न कीजिए। जो कुछ मैं कहता हूं उसपर विश्वास कीजिए और थोड़ी देर ठहर जाइए।

मिस-मिडि० । (अपने पिता के कान में) मिष्टर बेकर सच कहते हैं। कदाचित् सब हाल मालूम हो जाय।

मिष्टर जॉन ने अपनी पुत्री की राय को पसन्द किया और मकान के अन्दर चले। मिष्टर डार्नले ने किसी बात पर ध्यान नहीं दिया और मिष्टर जॉन के पीछे हो लिए। इन लोगों के साथ मिष्टर बेकर और सब नौकर चाकर भी चले। मिष्टर डार्नले की भद्दी सूरत देखकर एक नौकर हँसकर दूसरे

से कहने लगा, " मैं समझता हूं कि यह वही बुड्ढा है जो एक महीना हुआ यहां आया था। "

दूसरा०। मुझको याद पड़ता है कि मैंने इसे पहले भी देखा है, परन्तु मिष्टर जॉन को इस जङ्गली " हूस " को अपने साथ लाना उचित नहीं था।

मिष्टर डार्नले नौकरों के समीप थे, इस कारण उनकी बात-चीत स्पष्ट सुन सके। अपनी निन्दा सुनकर जब उन्होंने उन नौकरों की ओर कड़ी दृष्टि से देखा तो वे चुप हो गए।

मिष्टर बेकर ने इन तीनों मनुष्यों को एक सजे हुए कमरे में लाकर बिठलाया। थोड़ी देर के बाद गाड़ियों के आने की घरघराहट सुनाई दी। मिष्टर जॉन ने उठकर एक खिड़की में से देखा और कहा, " कदाचित् इसी गाड़ी पर मालिक-मकान आए होंगे। " मिस-मिडिल्टन भी खिड़की के निकट गई और देखकर कहने लगी, "यह तो भाड़े की गाड़ी है। नए मालिक अपनी फिटन गाड़ी पर तड़क भड़क से आवेंगे। वह इस प्रकार भला क्यों आवेंगे ? "

मिष्टर जॉन। वस्तुतः आश्चर्य्य है कि मालिक नहीं हैं और मेहमान सब आ गए।

इतने में दोनों गाड़ियाँ आकर ठहरीं और प्रत्येक गाड़ी पर से एक एक जण्टिलमैन और दो दो लड़कियां उतरीं।

मिस-मि०। कदाचित् ये दोनों जण्टिलमैन पिता हैं और चारो लड़कियां उनकी कन्याएं हैं (इधर उधर देखकर) परन्तु मिष्टर डार्नले कहां चले गए ?

मिष्टर जॉन (चारो ओर देखकर) वह निश्चय उस ओर गए होंगे जहां चित्र लगे हैं, क्योंकि चित्रों से उनको बहुत प्रेम है।

इतने में एक नौकर चाय और मिठाई लाया। मिष्टर जॉन ने उससे पूछा, "क्या इन गाड़ियों पर सब मेहमान आ गए?"

नौकर। जी हां।

मिष्टर जॉन ने थोड़ी चाय पी, किन्तु मिस-मिडिल्टन ने कुछ नहीं खाया। थोड़ी देर के बाद द्वार खुला और दूसरे नौकर ने आकर कहा कि "कर्नल बिलासिस और उनकी दो पुत्रियां तथा मिष्टर ब्यूशम्प और उनकी दो लड़कियां आती हैं।"

कर्नल बिलासिस की अवस्था साठ वर्ष के लगभग होगी। उनका स्वभाव बहुत ही कटु था। उनकी दो पुत्रियां जिनका नाम करोलिन और बर्था था यद्यपि अत्यन्त रूपवती तो न थीं तथापि युवावस्था और बहुमूल्य वस्त्रों के कारण कुछ भली लगती थीं। बड़ी की अवस्था २२ वर्ष की और छोटी की २० वर्ष की थी। उन दोनों का स्वभाव भी उनके पिता ही का सा था। वही चञ्चलता, वही कटुता, वही अपव्यय और वही शृङ्गारप्रियता दोनों में थी।

मिष्टर ब्यूशम्प की अवस्था भी प्रायः उतनी ही जितनी कर्नल बिलासिस की और स्वभाव भी दोनों का एक ही सा था। अहङ्कार और घमण्ड दोनों के मस्तिष्क में भरा हुआ था और दोनों अपने को बड़ा बुद्धिमान समझते थे।

मिष्टर ब्यूशम्प की दो पुत्रियां एमिली और लूसी जिनकी उम्र १८ और २० वर्ष की थी उतनी भी रूपवती न थीं जितनी कर्नल की पुत्रियां थीं, किन्तु इन दोनों के मुखड़े पर भोलापन और गम्भीरता पाई जाती थी और बातचीत से प्रतीत होता था कि इनका स्वभाव नम्र और दयालु है। मिष्टर ब्यूशम्प और कर्नल बिलासिस मिष्टर जॉन के बहनोई

थे, परन्तु कई वर्ष से साक्षात् न होने के कारण मिष्टर जॉन उनको सहसा न पहचान सके।

मिष्टर जॉन ने उनसे हाथ मिलाना चाहा परन्तु उन दोनों ने उनके हाथ में मानो उंगलियां छुला कर अपना२ हाथ खींच लिया, किन्तु मिष्टर जॉन इतने प्रसन्न थे कि उन्होंने इन बातों को लक्ष भी नहीं किया और अपने बहनोई तथा भाञ्जियों से एक २ करके मिलने लगे। करोलिन और वर्था तो बड़ी अप्रसन्नता से मिलीं, किन्तु जान पड़ता था कि एमिली और लूसी को इस मुलाकात से बहुत हर्ष हुआ है।

मिष्टर जॉन उन चारो को आशीर्वाद दे कर कहने लगे, "मे यही है। प्यारी बेटी मे! (मे-मिडिल्टन की ओर देखकर) अपनी बहिनों से गले मिलो और उनको प्यार करो।"

एमिली और लूसी ने बढ़कर 'मे' को प्यार किया और उससे मिलकर बहुत प्रसन्न हुईं। करोलिन और वर्था ने केवल सलाम का जवाब दिया।

कर्नल विलासिस 'मे' से हाथ मिलाकर कहने लगे, "अहा! तुम हो मिस-मिडिल्टन! (मिष्टर ब्यूशम्प की ओर देख कर) ऐसी रूपवती लड़की और एक किसान के घर में!"

ब्यूशम्प। (हँस कर) ठीक, ठीक, खूब कहा।

परन्तु इन महाशय ने इतनी दया की कि मे की पीठ पर जरा हाथ फेर दिया।

मिष्टर जॉन को अपने बहनोइयों की असभ्यता का अब ध्यान हुआ। उनको विशेष दुःख इस बात का हुआ कि फिर कर 'मे' को देखा तो वह अपने नेत्रों से आँसू पोंछ रही थी।

एक और मनुष्य भी यह दृश्य देख रहा था। वह मिष्टर

डार्नले थे। जिस समय कर्नल विलासिस आदि आए थे उस समय तो वह एक द्वार के पीछे छिपकर सारा दृश्य देख रहे थे, परन्तु अब सबके सामने बड़े कमरे में चले आए।

मिष्टर जॉन मिष्टर डार्नले को अपने साथ लाए थे, इस कारण सबको उनका परिचय देना उचित जानकर उन्होंने कहा, "यह हमारे मित्र मिष्टर डार्नले हैं।"

कर्नल विलासिस ने हाथ के संकेत से मिष्टर डार्नले के सलाम का उत्तर दिया और उनकी पुत्रियां केवल सिर हिलाकर चुप हो रहीं। मिष्टर ब्यूशम्प और उनकी दोनों लड़कियां आश्चर्य्य से मिष्टर डार्नले का मुँह देखने लगीं। उस समय उस बुड्ढे ने उच्चस्वर से कहा, "हमारा नाम डार्नले नहीं है। हम वही हैं जिनसे मिलने आप लोग आए हैं, अर्थात् हम इस गृह के स्वामी हैं। आप लोग केवल हमारे मेहमान ही नहीं हैं वरन् सम्बन्धी भी हैं। हम वही है जिसके विषय में कई वर्ष से प्रसिद्ध था कि डूबकर मर गया, अर्थात् हम मिष्टर जॉन के बड़े भाई जार्ज-मिडिल्टन हैं।"

बारहवां प्रकरण।

मिष्टर जॉर्ज अपने छोटे भाई मिष्टर जॉन से दशही वर्ष बड़े थे, किन्तु निर्बल और क्षीणकाय होने के कारण बहुत ही वृद्ध जान पड़ते थे। यदि उनका सम्पूर्ण जीवनचरित लिखा जाय तो एक बड़ी पोथी तय्यार हो जाय, अतएव संक्षेप में वर्णन किया जाता है कि जब उनकी अवस्था केवल २४ वर्ष की थी तो वह व्यापार का माल लेकर लिवेण्ट नगर की ओर रवाना हुए थे। मार्ग में उनपर डाका पड़ा और डाकुओं ने उनके सब

माल अस्बाब और जहाज पर अपना अधिकार कर लिया। वे सब जहाज को ट्यूनिस की ओर जहां वे रहते थे ले चले, किन्तु जब जहाज उस नगर के निकट पहुँचा तो समुद्र में एक बड़ा भारी तूफान आ गया। यहां तक कि जहाज डूब गया और मिष्टर जॉर्ज को छोड़ एक आदमी भी जीवित न बचा।

मिष्टर जॉर्ज एक तख्ते को पकड़े हुए बहते बहते किनारे पर जा लगे। वहां के नौकरों ने उन्हें पकड़कर गुलाम बनाया और अर्बी सेना के "मेगजीन" में उनको कोई काम सुपुर्द किया गया। मिष्टर जॉर्ज ने अपने उद्योग और परिश्रम से वहां के सब लोगों को अपने ऊपर प्रसन्न कर लिया, जिसका परिणाम यह हुआ कि वे सब प्रसन्न होकर उनको अपने सर्दार के सम्मुख ले गए। सर्दार ने मिष्टर जॉर्ज को एक उच्च पद पर नियुक्त किया। मिष्टर जॉर्ज ने वहां कई वर्ष में अपनी बुद्धिमानी से बहुत धन एकत्र कर लिया। उस नगर में वह ३५ वर्ष रहे। वहीं उनके काले बाल सफेद हुए और दांत टूटे। उस समय उन्होंने सोचा कि मेरे कोई सन्तान नहीं है और इस धन का जिसको मैंने बड़े परिश्रम से एकत्रित किया है कौन मालिक होगा? उस जगह कोई ऐसा मनुष्य नहीं था जिसको वह सहर्ष अपना सब धन दे देते। अन्त में उन्होंने यही निश्चय किया कि अपनी जन्मभूमि में जाकर बिछुड़े हुए मित्रों और सम्बन्धियों में जा मिलूं।

मिष्टर जॉर्ज यह इरादा करके वहां से भागकर "जेनेवा" नगर में आए और वहां से अपना सब धन लन्दन के एक महाजन के नाम हुण्डी कर दिया। उसके उपरान्त आप भी अपनी जन्मभूमि की ओर चले। उन्होंने उचित नहीं जाना

कि पहले आते ही अपना नाम प्रगट कर दें। बस यही सोच कर और अपना नाम मिष्टर डार्नले रखकर वह उस गांव में पहुंचे, जहां अब उनके छोटे भाई मिष्टर जॉन रहते थे और जो उनकी जन्मभूमि था।

मिष्टर जॉर्ज को पता लगा कि उनके बड़े भाई एक पुत्र छोड़कर मर गए और उनकी दोनों बहिनें भी प्रत्येक दो दो पुत्रियां छोड़कर परलोक की यात्रा करने चली गईं, केवल छोटे भाई जीवित हैं और अद्यावधि जमीन्दारी का काम वही सम्हाले हैं। ये बातें उनको मिष्टर जान्सन एटर्नी द्वारा मालूम हुई थीं।

हमारे पाठकगण मिष्टर जॉर्ज के विषय में बहुत कुछ जान गए, अब हम कहानी को इस प्रकार पुनः आरम्भ करते कि जब उस बुड्ढे ने अपने को जॉर्ज-मिडिल्टन बतलाया तो जितने लोग उस कमरे में उपस्थित थे सब पर एक सन्नाटा छा गया। मिष्टर जॉन ने अपने खोए हुए भाई को पहचाना और उनसे गले मिलकर आनन्दाश्रु विसर्जन करने लगे।

मिष्टर जॉन के अलग होते ही करोलिन और वर्था दौड़कर उनसे गले मिलीं। कुछ देर पहले जिसके सलाम के जवाब में केवल माथा हिलाती थीं, अब उसकी चापलूसी करने लगीं!

मिष्टर जॉर्ज का एक हाथ तो कर्नल विलासिस ने पकड़ा तथा दूसरा मिष्टर ब्यूशम्प ने, और बड़ी प्रतिष्ठा करने लगे, इस कारण कि उन सबको विश्वास हो गया था कि मिष्टर जॉर्ज अपने साथ बहुत धन कमा कर लाए है। अब एमिली और लूसी के गले मिलने की बारी आई। उन दोनों ने भी गले मिलकर प्रसन्नता प्रगट की। यह स्पष्ट प्रतीत होता था

कि उन दोनों को निःसन्देह हर्ष हुआ है, परन्तु ऐसे आवश्यक समय पर मिस-मिडिल्टन कहां गई ?

वह यह दृश्य देखकर अपना चित्त सम्हाल न सकी । मारे हर्ष के फूली न समाकर एक कुर्सी पर बैठ गई और आनन्दाश्रु बहाने लगी । इतने में उसके कान में आवाज आई, " क्या और कोई मिलने को नहीं है ? मे कहां है ? "

मे० । चाचा जी ! मैं यहां हूं ।

यह कहती हुई वह दौड़ी और जाकर पांवों पर गिर पड़ी, फिर सिर उठाकर उनके हाथों को चूम लिया । मिष्टर जॉर्ज ने उसको प्यार किया और आशीर्वाद देने लगे ।

इसके उपरान्त मिष्टर जॉर्ज सबको लेकर एक जगह बैठ गए और अपनी सारी कहानी कह सुनाई जो ऊपर कही जा चुकी है, परन्तु यह नहीं कहा कि यह सब धन किसको देंगे और यह भी नहीं बतलाया कि अपने को मिष्टर डार्नले क्यों बना रक्खा था ।

थोड़ी देर पीछे उनके सेक्रेटरी मिष्टर जान्सन एटर्नी आए। अब मिष्टर जॉन और उनकी पुत्री को ज्ञात हुआ कि मिष्टर डार्नले और एटर्नी महोदय से क्यों पत्रव्यवहार होता था । मिष्टर जान्सन मिष्टर जॉर्ज के निकट जाकर कहने लगे, " हमने मिष्टर बेकर को उसके नए साहब का नाम अभी बतलाया, जिसके सुनने से उसको बड़ा आश्चर्य हुआ । "

मिष्टर जॉर्ज । हां, स्वयं मैंने दो नौकरों को कुछ कहते सुना था, परन्तु उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया ।

भोजन का समय हो चुका था । मिष्टर जॉर्ज सबको साथ लेकर टेबुल के कमरे की ओर चले। जब सीढ़ियों पर पहुंचे तो

सब नौकरों ने अपने नए स्वामी को सलाम किया, किन्तु वे दोनों जिन्होंने मिष्टर जॉर्ज को मिष्टर डार्नले जानकर बुरा भला कहा था सबसे झुक झुक कर सलाम करने लगे। उनकी यह चाल देखकर मिष्टर जॉर्ज को हँसी आ गई।

तेरहवां प्रकरण।

सब उस टेबुल के चारों ओर जिसपर बहुमूल्य पात्रों में भोजन चुने गए थे जा बैठे और भोजन करने लगे।

अब कर्नल बिलासिस और ब्यूशम्प मिष्टर जॉन और उनकी पुत्री के साथ अच्छी तरह बातचीत करने लगे, इस कारण कि उन्होंने देखा कि मिस्टर जॉर्ज उन दोनों से बहुत प्रसन्न हैं।

मिष्टर जॉर्ज ने भोजन समाप्त होने पर कहा, " आप लोग इस मकान को अपना ही घर समझें और चारो ओर सैर करके भी बहलावें। पहले तस्वीरों के कमरे में चलें, फिर बड़े कमरे में चलकर बैठेंगे। "

तस्वीरों के कमरे के देखने को सब लोग चले। वहां अत्यन्त सुन्दर और बड़े२ चित्र थे। मिष्टर जॉर्ज चित्रों को इस प्रकार देख रहे थे कि मानो इस समय उनको किसी और बात की सुधि ही नहीं है। एक ओर कर्नल बिलासिस और ब्यूशम्प खड़े होकर उस बड़े मकान पर किसी प्रकार अपना अधिकार कर लेने के विषय में सलाह करने लगे, दूसरी ओर मिष्टर जॉन अपनी पुत्री और जान्सन एटर्नी के साथ टहलने लगे और करोलिन तथा बर्था भी एक ओर का दृश्य देखने लगीं। तात्पर्य्य यह कि इसी प्रकार सब दो दो एक एक साथ होकर इधर

उधर टहल टहल कर देखने भालने लगे ।

तस्वीरों के कमरे के दोनों ओर दो कमरे थे । करोलिन और बर्था उन्हीं कमरों में से एक में गई । वहां जाकर देखा कि एक चित्र पर पर्दा पड़ा हुआ है । करोलिन को आश्चर्य हुआ कि यह चित्र छिपाकर क्यों रक्खा गया है । अपनी बहिन से पूछने लगी, " मैं यह चित्र देखना चाहती हूं । मुझे आश्चर्य है कि यह छिपाया क्यों गया ! "

बर्था । (धीरे से) कहीं ऐसा काम न करना कि हमारे बहुत दिन के खोए हुए मामा रुष्ट हो जायँ । कौन जानता है कि वह किसको अपना सब धन दे देंगे ।

करोलिन । मैं बड़ी सावधानी से देखूंगी, परन्तु सोचती हूं कि कहीं यह किसान और उनकी गँवार बेटी ही हमारे बुढ़े मामा के धन की सर्वाधिकारिणी न हो ।

बर्था । नहीं ऐसी नहीं हो सकता । इस कारण कि मैंने भोजन के समय देखा कि वह सब को एक ही दृष्टि से देखते थे । खैर क्या वह चित्र अब न देखोगी ?

करोलिन ने चारो ओर देखकर पर्दा उठाया । एक साधारण चित्र दिखाई दिया । यह देखकर उन दोनों को और भी आश्चर्य हुआ कि इस चित्र पर पर्दा क्यों डाला गया है ? फिर अपने मन में सोचने लगीं कि कदाचित् गर्द से बचाने के लिए पर्दा डाला गया होगा । अकस्मात् बर्था की दृष्टि द्वार पर पड़ी । देखा कि मिष्टर जार्ज सहसा आ पड़े । दोनों ने तुरन्त चित्र पर पर्दा डाल दिया और उनके समीप जाकर उनका मुंह देखने लगीं, किन्तु मिष्टर जॉर्ज के मुखड़े पर असन्तुष्टता का कोई लक्षण न देखकर बहुत प्रसन्न हुई । चित्र विषयक बातें

पाठकों को आगे चलकर मालूम होंगी, अभी बताने की कुछ आवश्यकता नहीं है।

प्रातःकाल मिष्टर जॉर्ज ने अपने एटर्नी मिष्टर जान्सन से सब हिसाब-किताब समझकर अपने भतीजे विल्फ्रिड का हाल पूछा, जिसके उत्तर में एटर्नी महाशय ने कहा, "लगभग एक मास पूर्व्व एक दिवस विल्फ्रिड मेरे पास आया और एक पुलिन्दा देकर बोला कि 'यह पुलिन्दा मिष्टर डार्नले ने आपको दिया है और मुझही से जवाब लाने को भी कहा है।' मैं समझ गया कि आप ही ने उसको भेजा है। पत्र पढ़कर मैंने उससे कहा कि वह मिष्टर डार्नले नहीं है, वरन् तुम्हारे चाचा मिष्टर जॉर्ज-मिडिल्टन हैं जो बहुत दिन से गुम हो गए थे। यह सुनकर उसको आश्चर्य्य हुआ, किन्तु मैंने उसको कुछ और कहने का अवसर नहीं दिया, कहा कि तुमको तो उनका सब हाल मालूम है, क्योंकि उन्होंने जान बुझकर अपनी पाकेट-बुक टेबुल के नीचे छोड़ दी थी। उनको भी तुम्हारे गुप्तविवाह और धोखा देकर मिस-मिडिल्टन के साथ विवाह करने की चेष्टा करने का हाल भी मालूम है।"

मिष्टर जॉर्ज। इन बातों को सुनकर उसने क्या कहा?

मि० जान्सन। वह बहुत घबरा गया और उसका चेहरा पीला पड़ गया। कुछ कहना चाहता चाहता था, परन्तु मुंह से बात नहीं निकलती थी। तब मैंने उससे कहा कि, "तुहारे चाचा यह भी जानते हैं कि तुमने अपनी सब सम्पत्ति नष्ट कर डाली, परन्तु वह आशा करते हैं कि अब तुम सीधी चाल चलोगे और अपने परिश्रम से सर्व्वप्रिय बनोगे, लेकिन अब तुम मिस-मिडिल्टन के पास जाने अथवा उससे पत्रव्यवहार करने न पाओगे और

यदि करोगे तो हानि उठाओगे क्योंकि वह तुम्हारी दुष्टता तो जान ही गए हैं ? इसके सिवाय तुम कर्नल बिलासिस या और किसी से अपने चाचा के आने का हाल न कहना।"

मिष्टर जॉर्ज। (सब बातों को ध्यानपूर्व्वक सुनकर) फिर उसने क्या कहा ?

मि० जान्सन। उसको इन आशातीत बातों से जो एक बार पुनः अपने खोटे भाग्य के परखने का अवसर मिला तो वह प्रसन्न हुआ और कहने लगा कि, "वह मेरे वास्ते जो चाहें करें, परन्तु अब मैं प्रतिज्ञा करता हूं उन निन्दनीय बातों से एकबार ही दूर रहकर जिस प्रकार भले लोग रहते हैं उसी प्रकार अपना निर्वाह करूंगा।" जान पड़ता था कि वह अपने किए पर आप पश्चात्ताप करता था और जैसा कहता है वैसाही करेगा।

मिष्टर जॉर्ज। ईश्वर करे ऐसाही हो, परन्तु मुझको उसके कहने पर विश्वास नहीं है।

मि० जान्सन। तब मैंने आपकी आज्ञा के अनुसार एक सहस्र रुपये का नोट देकर कहा, "इन रुपयों से कोई व्यापार आरम्भ करो। यदि तुम्हारी चाल चलन अच्छी रही तो तुम्हारे चाचा फिर तुम्हारी सहायता करेंगे, किन्तु यदि इससे विपरीत रही तो उनसे कुछ आशा न रखना। अब इन रुपयों को ले जाओ और सावधानी से काम करो।"

मिष्टर जॉर्ज। तब उसने क्या कहा ?

मि० जान्सन। आपको धन्यवाद देने लगा। फिर बोला कि "आज से आप मुझको वह पहला विल्फ्रिड न पावेंगे।" और यह कहकर बिदा हुआ।

मिष्टर जॉर्ज। तुमने यह नहीं पूछा कि कहां रहता है और क्या करता है?

मि० जान्सन। नहीं, मैं आपके कामों में इस प्रकार मुग्ध हुआ कि मुझको फिर अवकाश ही नहीं मिला। लन्दन जाने पर उसका हाल आपको अवश्य लिखूंगा।

जिस दिन मिष्टर जॉर्ज के साथ बातचीत हुई उसी दिन तीसरे पहर मिष्टर जार्ज के बारिष्टर मिष्टर जान्सन सब से बिदा होकर लन्दन चले गए।

मिष्टर जॉर्ज ने स्वयं कर्नल विलालिस और मिष्टर ब्यूशम्प से एक महीना ठहरने के लिए कहा, जिसको उन दोनों और उनकी पुत्रियों ने सहर्ष स्वीकार किया। इसके अनन्तर मिष्टर जॉर्ज ने अपने छोटे भाई को कमरे में ले जाकर कहा, "भाई! यद्यपि मैं जानता हूं कि आपकी इच्छा यही है कि सदैव मेरे साथ रहकर यह चार दिन जिन्दगी सुख से बितावें, परन्तु आपको भी तो अपना काम काज देखना आवश्यक है, इस वास्ते मैं चाहता हूं कि आज तीहरे पहर के समय आपको बिदा करूं। मेरी इच्छा तो यह थी कि 'मे' को अपने साथ रखता और उसकी भोली भोली बातों से अपना जी बहलाता, किन्तु मैं ऐसा बुद्धिहीन नहीं हूं कि अपने सुख के लिए उसको उसके प्यारे पिता से पृथक् करूं। इसके अतिरिक्त उसके न रहने से आपके काम में भी हर्ज होगा, फलतः उसको भी आपके संग ही बिदा करूंगा और जब हम दोनों थोड़ी ही दूर पर रहते हैं तो बराबर मिलते रहेंगे और मिस-मिडिल्टन प्रत्येक सोमवार को मेरे पास आया करेगी। एक मास के लिए मैंने कर्नल बिलासिस और मिष्टर ब्यूशम्प को मय उनकी पुत्रियों के अपने यहां रख लिया

है। उनके जाने के बाद मैं प्रायः आपके यहां आया करूंगा ।"

मिष्टर जॉन । जितनी जल्दी मुलाकात हो उतना ही अच्छा है ।

इस बातचीत के बाद मिष्टर जॉर्ज अपने भाई आदि को लेकर टहलने गए और भोजन के समय लौट आए । भोजन के पश्चात् मिस-मि० और मिष्टर जॉन मिष्टर जॉर्ज से विदा होकर अपने घर की ओर चले और आठ बजे रात को आराम से वहां पहुंच गए ।

मिस-मिडिल्टन घर का काम-काज करके जी बहलाने के लिए बगीचे में गई और आश्चर्य्य में डालनेवाली पिछली घटनाओं पर विचार करने लगी । उसको जान पड़ता था कि जितनी बातें देखीं थीं सब स्वप्न था । सहसा पीछे किसी के पांवों की आहट मालूम हुई। उसने फिर कर देखा कि विल्फ्रिड आ रहा है । विल्फ्रिड को देखते ही उसके चित्त पर एक प्रकार का सन्नाटा छा गया ।

चौदहवां प्रकरण ।

विल्फ्रिड मातमी कपड़े पहिने हुए था । उसको देखकर मिस-मिडिल्टन को बड़ा आश्चर्य्य हुआ कि कौन मर गया है । वह आश्चर्य्यदृष्टि से उसका मुंह देखने लगी । सहसा विल्फ्रिड दौड़कर उसके पांवों पर गिर पड़ा और कहने लगा—

" मिस–मिडिल्टन ! मेरे अपराधों को क्षमा करो । मैं तुम्हारे मुंह से केवल " क्षमा " का शब्द सुनना चाहता हूं । "

मि-मि० । (अपने को सम्हालकर) हां, मैं तुम्हारे अपराधों को क्षमा कर सकती हूं, परन्तु यदि तुम्हारा यह मतलब

हो कि मुझसे फिर वही मेल जोल और प्रीति बढ़ाओ तो यह कदापि सम्भव नहीं है।

यह कहकर वह घर की ओर चली, किन्तु उसी समय एक करुणोत्पादक स्वर उसे सुन पड़ा। वह खड़ी हो गई। इतने में विल्फ्रिड पुनः उसके सम्मुख आया और गिड़गिड़ाकर कहने लगा, " मैं तुमको शपथ दिलाता हूं कि मेरी प्रार्थना स्वीकार कर लो और क्षण भर ठहर कर जो कुछ मैं कहूं सुन लो। "

मिस-मि०। तुम्हें जो कुछ कहना हो पिता जी के सामने चलकर कहो।

विल्फ्रिड। (काँपकर) नहीं नहीं, मैं उनके सामने जाने का साहस कदापि नहीं कर सकता।

मि-मि०। जब तुम उनसे मिलने से लज्जित होते हो तो उनकी पुत्री से क्यों बातचीत करना चाहते हो ?

' मे ' इतना कहकर पुनः घर की ओर चली। विल्फ्रिड निराश होकर चिल्ला उठा, " आह ! अब वह नहीं सुनेगी। अब तो लाचार आत्मघात करना पड़ा। " आत्मघात का शब्द सुनकर मे थर्रा उठी और इस भय से कि कदाचित् वह वैसाही करे जैसा कह रहा है सहम कर खड़ी हो गई।

विल्फ्रिड। (रोकर) तुम अपने सम्मुख एक ऐसे व्यक्ति को देखती हो जिसने तुम्हारा ऐसा अपराध किया है कि उसके लिये मरना जीना दोनों बराबर है।

मिस-मि०। यदि सचमुच तुमको अपने अपराधों का पश्चात्ताप है तो उन बुरी चालों को छोड़ दो और भगवद्भजन में मन लगा कर उसी सर्वशक्तिमान् परमेश्वर से अपना अपराध क्षमा कराओ।

विलिफ्रड । (आँसू पोंछकर) तुम्हारी बातों से मन सन्तुष्ट हुआ । आह ! मिस मिडिल्टन ! यदि तुम मेरी दुःखकथा सुनो तो तुम अवश्य मुझ पर दया करोगी । आह ! जिससे मैंने विवाह किया था और जिसके साथ विवाह करने के कारण मेरी यह दुर्दशा हुई वह मेरा साथ छोड़कर परलोक को चली गई ।

मिस-मि० । (धीमी आवाज से) भगवान् उसकी आत्मा को शान्ति दें ।

विलिफ्रड । मैंने इन मातमी कपड़ों को केवल जातीय नियम की पुष्टता के लिए पहिना है, अन्यथा मुझको उसके मरने का किञ्चित भी शोक नहीं है ।

मिस-मि० । बस, अब मैं और कुछ नहीं सुनना चाहती ।

विलिफ्रड । एक बात और ! मैंने अब तक यह नहीं कहा कि छिपकर तुम्हारे पास क्यों आया और अपने अपराधों को क्यों क्षमा कराना चाहा ।

मिस-मि० । विलिफ्रड ! वे थोड़े दिन जो तुम्हारी कुसङ्गत में व्यतीत हुए स्वप्न के समाने थे । अब वह बात फिर न होगी । यदि तुम यह समझते हो कि तुम्हारी स्त्री की मृत्यु से वह बात जो पहले थी फिर हो जायगी, तो यह तुम्हारा भ्रम है ।

विलिफ्रड । तुम मुझको निराश करती हो ? बस ईश्वर हो जानता है कि तुम्हारे वास्ते मेरा क्या हाल है ।

मिस-मि० । (क्रोध से) बस अब कोई बात मुंह से न निकलना । यहां से अभी चले जाओ ।

विलिफ्रड । केवल एक मिनट ठहरकर मेरी बात सुन लो ।

मिस-मि० । (दयाभाव से) अच्छा कहो, कहते हो तो जल्दी कहो । मैं देरतक ठहर नहीं सकती ।

विल्फ्रिड। यदि अब मेरा चालव्यवहार सर्वप्रिय हो जाय और मैं दो एक वर्ष में अपने को साधुस्वभाव प्रमाणित कर दूं तो क्या तब भी तुम्हारे पाने की आशा नहीं कर सकता ?

मिस-मि०। हमने पहले ही कह दिया कि यह कदापि नहीं हो सकता और तुम इस बात को अपने चित्त से दूर करो। यदि तुम मेरे सम्बन्धी न होते तो मैं कदापि इतनी देर तक तुम्हारे पास न बैठती।

विल्फ्रिड। तो अब मुझे तुम्हारे मिलने की कोई आशा नहीं रही ? (निराश होकर) अब मुझे विश्वास हो गया कि तुम कभी मुझसे प्रीति नहीं करती थीं। तब तुमने समझा था कि मैं बड़ा धनी हूं और इसी कारण धोखे से कहा था कि मैं तुमको चाहती हूं।

यह बात सुनकर मिस-मिडिल्टन को बहुत दुःख हुआ, इस कारण कि पहले वह सचमुच विल्फ्रिड को चाहती थी, और उसकी आँखों में आँसू डबडबा आए। विल्फ्रिड ने फिर कहा, "जब हम और आप अकेले बगीचे की सैर करते थे, उस समय की प्रेम की मीठी मीठी बातें केवल वाकपटुता से सम्बन्ध रखती थीं।"

मिस-मि०। (क्रोध को रोककर) जरा मुंह सम्हालकर बातें करो। अपनी उन बातों की पुष्टि के लिये अब मुझको भी कुछ कहना पड़ा। उसको ईश्वर ही जानता है कि मुझको तुमसे प्रीति थी वा नहीं, परन्तु जब मैंने सुना कि तुम विवाह कर चुके हो और धोखा देकर मुझको अपने अधिकार में लाना चाहते हो तो मुझको बहुत दुःख हुआ और तुमसे घृणा हो गई।

विल्फ्रिड । (कुछ आशा करके) मिस-मिडिल्टन ! कुछ तो आशा दिलाओ कि मुझको वही विल्फ्रिड समझती हो। कोई पापिष्टी जब उस जगत्पालक परमेश्वर के ध्यान में मुग्ध होकर क्षमाप्रार्थी होता है तो वह उसके अपराधों को क्षमा कर देता है और उसपर दया करता है । तुम्हें भी वैसा ही करना चाहिए जैसा कि तुम्हारा स्वामी बल्कि समग्र संसार का स्वामी करता है । (मे के पैरों पर गिर कर) तुमको उसी की कसम है जिसने समस्त जीवों के उत्पन्न किया है और मारेगा । तुम अपने मुंह से केवल इतना ही कह दो कि मुझे अब भी तुम्हारे पाने की थोड़ी बहुत आशा हो सकती है ।

मिस-मि० । (खेद की दृष्टि से देखकर) क्या करूं, लाचार हूं । मेरे मुंह से तो आशा का शब्द नहीं निकल सकता।

विल्फ्रिड । (पांवों पर से उठकर) तो तुम मुझे निराश ही करती हो ?

मिस-मि० । मैं ईश्वर से प्रार्थना करती हूं कि वह तुमको बुद्धि और सद्विचार दें ।

विल्फ्रिड । एक वात और भी कहनी है । मिष्टर जॉर्ज जिन्होंने मेरी बड़ी सहायता की है और आगे सहायता देने की प्रतिज्ञा भी की है आज की बातें न जानने पावें ।

मिस-मि० । तुम्हारी यह बात मैं तब ही स्वीकार कर सकती हूं जब तुम प्रतिज्ञा करो कि मेरे पास फिर कभी छिपकर न आओगे ।

यह कहती हुई मे उठी और विल्फ्रिड की दृष्टि से दूर हो गई । दूसरे दिन प्रातःकाल जिस समय वह अपने पिता के साथ जलपान कर रही थी, एक नौकर ने आकर कहा, " एक

मजदूर की लड़की बहुत बीमार हो गई है।"

मिस-मि०। मैं उसके पास जाकर उसे अवश्य देखूंगी।

मिष्टर जॉन अपनी पुत्री के इस सदूविचार से बड़े प्रसन्न हुए और उसको आशीर्वाद देने लगे। जलपान के उपरान्त मिस-मिडिल्टन एक टोकरी में भोजन की चीजें साथ लेकर उस लड़की को देखने चली। वह झोपड़ा जिसमें वह मजदूर अपने बाल बच्चों के साथ रहता था 'मे' के घर से एक मील के अन्तर पर एक रमणीक स्थान में अवस्थित था। चारो ओर सरो के सुन्दर वृक्ष लगे हुए थे। चञ्चल चिड़ियां इतस्ततः फुदक रही थीं और ठण्डी ठण्डी हवा चल रही थी। मिस-मिडिल्टन भी अठखेलियां करती हुई उस सुरम्य स्थान के समीप पहुंची।

यह मजदूर वही है जो १९ वर्ष पूर्व्व अपनी गाय की घास रखने की जगह के पास एक छोटे बच्चे को पड़ा देखकर उठा लाया था, और जिस बच्चे को मिष्टर जॉन ने पाल पोस कर बड़ा किया था, तथा जिसका नाम उन्होंने रूबन वेलिस रक्खा था।

मे को देखते ही वह मजदूर समझ गया कि मेरा भाग्य उदय हुआ है। तुरंत झुककर सलाम किया और झोपड़े के भीतर ले जाकर कहा,—"दास तो अब आपके पिता के खेत में काम करने जाता है।"

मिस-मि०। तुम कुछ चिन्ता न करो। पिताजी डाक्तर को बुलाने गए हैं और मैं ये चीजें तुम्हारी बेटी के वास्ते लाई हूँ।"

यह कहकर मिस ने जो कुछ उस टोकरी में था निकाल कर सामने रख दिया। मजदूर आशीर्वाद देने लगा और प्रसन्नतापूर्व्वक उसके पिता के खेत का काम देखने चला गया। इधर मिस-मिडिल्टन लड़की का हाल उसकी मां से पूछने लगी।

लड़की की मां । कल हमारे "वह" कहते थे कि वह बूढ़े आदमी जो आपके यहां रहते थे और जिन्होंने एक दिन यहां आकर हमारी लड़की को एक रुपया दिया था आपके चाचा जॉर्ज-मिडिल्टन निकले ! वह अपने साथ बहुत धन लाए हैं और एप्सूली-कोर्ट को भी उन्होंने खरीद लिया है। प्यारी मिस ! क्या ये बातें सच हैं, या उन्होंनेसपना देखा था ?

मिस-मि० । (हंसकर) हां, सत्य हैं ।

ल० की मां । (आश्चर्य्य से) यह तो कहानी मालूम होती है ! बिल्कुल वैसी ही कहानी जैसी जाड़े के दिनों में आग के पास बैठकर हमलोग कहा और सुना करते है । प्यारी मिस ! जबसे रूबन यहां से गया हमने एक दिन भी आपकी सूरत नहीं देखी । जिस रात को वह बेचारा गया है, बहुत ही उदास मालूम होता था ।

रूबन का नाम सुनतेही मिस-मिडिल्टन को सब बातें याद आ गईं और वह "आह" भर कर कहने लगी," क्या वह जाती समय तुम्हारे पास भी आया था ? "

ल० की मां । जी हां, वह बेचारा हमसे बिदा होकरगया था । आपने तो सुना होगा कि हमारे पति रूबन को घास रखने की जगह से उठा लाए थे । न मालूम कौन निर्दयी बेचारे को वहां फेंक गया था । वह कभी कभी कहा भी करते हैं कि, " मुझको बड़ा आश्चर्य्य मालूम हुआ जब मैंने घास रखने की जगह में एक बच्चे के रोने की आवाज सुनी । जाकर देखता हूं तो एक बच्चा बहुमूल्य कपड़े पहिने पड़ा है । चेहरे और पहरावे से जान पड़ता था कि वह किसी बड़े घर का लड़का है । " प्यारी मिस ! नहीं मालूम कौन अभागा उसको वहां फेंक गया था ।

मिस० मि० । ईश्वर जानता होगा, और कौन जानेगा। हां, तुमने अभी कहा था न कि रूबन तुमसे विदा होकर गया था?

ल० की मां । हां, मैं नौ बजे रात को भोजन कर रही थी कि इतने में रूबन हाथ में एक गठरी लिए हुए आया । वह उस समय बहुत ही उदास मालूम पड़ता था । जब हमने बहुत जोर देकर पूछा तो कहने लगा कि, "अब मैं यहां से चला जाता हूं, लेकिन किसी से लड़-झगड़ कर नहीं जाता, सैर करने की इच्छा से जाता हूं।" यह सुनकर हम सबने समझा कि वह पागल हो गया है, लेकिन वह बहुत रोने और सिर धुनने लगा............(मि को रोते देखकर) इन बातों से आप को दुःख होता तो मुझे क्षमा कीजिए । मैंने व्यर्थ यह बात छेड़ी ।

मिस-मि० । (अपना चित्त सम्हालकर) वह बेचारा और क्या कहता था?

ल० की मां । कहता था कि ईश्वर आपके पिता को और आपको सुखी रक्खे....(द्वार की ओर देखकर) लीजिए अब डाक्तर साहब आ गए, यह बात जाने दीजिए ।

मिस-मिडिल्टन ने रूमाल से मुंह पोंछा और चेहरे से शोकचिन्ह दूरकर डाक्तर साहब से मिली । डाक्तर ने रोगी को देखकर कहा, "घबराने की कोई बात नहीं है" और नुसखा लिखकर चले गए । मिस-मिडिल्टन भी रूबन को याद करती और मन्द २ रोती हुई घर की ओर चली ।

पन्द्रहवां प्रकरण ।

अब वह महीना व्यतीत हो गया है जिसमें कर्नल विलासिल और ब्यूशम्प मिष्टर जॉर्ज के मेहमान थे । आजकल प्रत्येक

रविवार को मिष्टर जॉन मय अपनी पुत्री के मिष्टर जॉर्ज से मिला करते हैं और कभी कभी मिष्टर जॉर्ज भी दो एक घण्टे के लिए अपने भाई के घर चले जाते हैं।

मिष्टर जॉर्ज अपनी भाञ्जियों की जो लन्दन से आई थीं हर बात में जाँच करते थे। कभी बाजा बजाने को कहते, कभी कोई पुस्तक पढ़वाकर सुनते, कभी घराऊ काम काज की बातें करते और उनकी हरएक बात को ध्यान देकर सुनते थे।

एक दिन की बात है कि मिष्टर जॉर्ज अपनी भाञ्जियों के साथ बड़े कमरे में बैठे थे और कर्नल बिलासिस तथा ब्यूशम्प बाग की सैर कर रहे थे। कर्नल बिलासिस ने कहा, "अब हमारे जाने को बहुत कम दिन रह गए हैं और हमारी समझ में मिष्टर जॉर्ज अब हमलोगों से ज्यादा दिन ठहरने के लिए न कहेंगे।"

ब्यूशम्प। लेकिन मैं तो समझता हूं कि हमारे जाने से पहले ही वह अपना मतलब प्रगट कर देंगे, अर्थात् दानपत्र लिखने के विषय में वह अवश्य हमसे कुछ राय लेंगे, क्योंकि उनको हृदरोग है, जिससे मनुष्य सहसा मर जाता है। वह अपनी बीमारी का हाल कहते भी थे।

कर्नल बि०। हां हां, बुड्ढा मुझसे भी कहता था, लेकिन यह तुमने कैसे जाना कि वह राय भी पूछेगा?

ब्यूशम्प। आज प्रातःकाल एकान्त में उसने मुझसे मेरा हाल और इधर उधर की बातें पूछी थीं, और यह पूछना बेसबब नहीं था।

कर्नल बि०। मुझसे भी पूछता था। अच्छा तुमने क्या जवाब दिया?

ब्यूशम्प। मैंने पहले तो उसको धन्यवाद दिया, फिर इस

बात का विश्वास दिलाया कि उसकी बहिन जो मुझसे ब्याही गई थी व्यर्थ रुपया नष्ट करने में बड़ी तेज थी, और मैं उसी के कारण ऐसा धनहीन हो गया कि आज तक सम्हल न सका। मैंने यह भी प्रमाणित कर दिया कि मुझे दोनों लड़कियों की बड़ी चिन्ता है कि मेरे मरने के बाद उनका क्या हाल होगा (हँसकर) मैंने अपना दुःख प्रगट करने के लिए आँखें मलते मलते दो तीन बूंद आँसू भी निकाल दिए, और बड़ी बुद्धिमानी से बुद्धिहीन बुड्ढे को बेवकूफ बना दिया।

कर्नल बि०। (हंसकर) वाह वाह ! तुमने तो बड़ा काम किया। झूठ सच कहकर समझा तो मैंने भी दिया, और इन लड़कियों के विषय में भी विशेष दुःख प्रगट किया (मुस्कुराकर) किन्तु यार ! आँसू हमारे निकाले न निकल सके।

ब्यूशम्प। अब देखना है कि बुड्ढा अपना धन किस प्रकार बाँटता है। मुझसे तो कहता था कि जमीन्दारी को छोड़ प्रायः दो लाख उसके पास नकूद भी है।

कर्नल बि०। फिर जबकि मैं उसकी बड़ी बहिन का पति हूं तो अपनी जमीन्दारी का मालिक मुझही को बनावेगा, और कम से कम पचीस हजार रुपया मेरी दोनों बेटियों को देगा।

ब्यूशम्प। खैर योंही सही। यदि मेरे हिस्से में एक लाख रुपये पड़े तो जॉन और उसकी बेटी के लिए पचहत्तर हजार बहुत हैं।

कर्नल बि०। बस इतना उन दोनों के लिए बहुत है। (सहसा चौंककर) लेकिन सुनो तो, यह पेड़ों के पास से खर-खराहट की आवाज कैसी आ रही है, तुम भी सुनते हो न ?

ब्यूशम्प। कुछ नहीं, यह हवा की आवाज है। इस ऋतु

में दिन रात ऐसी ही हवा चला करती है ।

कर्नल वि० । खैर, लेकिन बुड्ढा बड़ा चतुर है ।

ब्यूशम्प । वही बुड्ढा सूअर न ? (हँसकर) निःसन्देह, चतुर नहीं है तो उसने इतना धन कैसे पैदा कर लिया ।

कर्नल वि० । अच्छा यदि वह चतुर है तो बुद्धिमान और कार्य्यपटु जानकर भी मुझही को अपनी जमीन्दारी का मालिक बनावेगा । मुझे विश्वास है कि तुमको भी बहुत रुपये देगा और अपने दिहाती जङ्गली भाई को बस इतनाही दे दिला कर टाल देगा कि उसके खाने भर को बहुत हो । तुम विश्वास मानो कि जो कुछ मैं कहता हूं वह वैसाही करेगा ।

ब्यूशम्प । हां, वह गँवार क्या जाने कि रुपया क्या होता है (कुछ सोचकर) परन्तु हम विल्फ्रिड को भूल गए ।

कर्नल वि० । नहीं हमें वह खूब याद है, भूलने क्यों लगे ? लेकिन वह कुछ पा नहीं सकता, क्योंकि यदि जॉर्ज उससे प्रसन्न होता तो उसको भी अवश्य बुलवाता । इसके अतिरिक्त मैंने उससे उसकी बड़ी निन्दा की है ।

ब्यूशम्प । और मैंने भी उस बुड्ढे गधे से उसके दुष्ट भतीजे की खूब ही खोलकर शिकायत की है ।

कर्नल वि० । अब हमें केवल एक बात की चिन्ता है ।

ब्यूशम्प । वह क्या ?

कर्नल वि० । यदि बुड्ढा दानपत्र लिखने से पहले ही मर गया तो न्यायानुसार विल्फ्रिड उसकी सब सम्पत्ति का स्वामी हो जायगा ।

ब्यूशम्प । (दुःखित होकर) हां, खूब बताया । अब हम-लोगों को चाहिए बुड्ढे को समझा बुझाकर जल्दी दानपत्र लिखा

लें, और हमको तो उसके समझाने का अधिकार भी है, क्योंकि हम उसके शुभेच्छु समझे जाते हैं । हम उससे कहेंगे कि मरने से पहले अपना धन किसी योग्य पुरुष को सुपुर्द कर दे ।

कर्नल वि० । (हँसकर) हमारे या तुम्हारे सिवाय तीसरा " योग्य पुरुष " है कौन ? अच्छा अब बहुत देर हो गई । चलो चलें । वे सब बड़े कमरे में हमारी बाट जोह रहे होंगे ।

इतनी बातें करके दोनों मन के लड्डू फोड़ते हुए उस बड़े कमरे की ओर चले जहां एमिली, लूसी, करोलिन और बर्था आदि पहले से बैठी थीं ।

पहला भाग समाप्त

